अग्नि से आनंद तक

कवि

प्रो. मादिराजु रंगाराव

अनुवादक

प्रो. माधवराव रेगुलपाटी

प्रकाशक

रसधुनि प्रकाशन (तेलुगु)

1995

साहिती समिति (हिन्दी)

1995

अग्नि से आनंद तक

MRL
256

कवि

प्रो. मादिराजु रंगाराव

अनुवादक

प्रो. माधवराव रेगुलपाटी

प्रकाशक

रसधुनि प्रकाशन (तेलुगु)

1995

साहिती समिति (हिन्दी)

1995

अग्नि से आनंद तक

(मुक्त – छन्द का महा काव्य)

कविता; प्रतियाँ 1000

मूल – प्रो. मादिराजु रंगा राव

अनु – प्रो. माधवराव रेगुलपाटी

प्रकाशन वर्ष – जून 1995

मूल्य - रु 150

प्रकाशक और पुस्तकें मिलने का स्थान

प्लाट नं (223, भवानी नगर

हन्मकोंडा – 506 001.

मुद्रण शाला

वेंकटरमण मुद्रणालयम्

(डि.टि.पि. एवं आफसेट प्रिंटर्स)

वरंगल – (आ.प्र)

अग्नि से आनंद तक

निर्माण का रूप

यह काव्य छह सर्गों में आविष्कृत हुआ है। इस की काव्य – वस्तु मानव जीवन है। वर्तमान अनुभव केन्द्र है। गत काल स्मृति वलय है। भविष्यत् वास्तव में समीप का स्वप्न है। भौतिक, मानसिक, तात्विक भूमिकाओं में परस्पर के स्मबन्धों से संयोजित है। प्रकृति का पुराभाव ऐतिहासिक, सामाजिक, मानसिक और तात्विक कोणों में चित्रित है। यह बहुत पहले से एक दूसरे को प्रभावित करते रहते हैं। इसमें जीवन के विस्तृत कान्वास पर परिणामक्रम में न होकर, वस्तु के आधार पर, अवसर के अनुसार संदर्भ गर्भित करके निर्माण की दृष्टि से निर्वाहण किया गयाहै।

प्रथम सर्ग :– उसके दो भाग हैं – एक सृजनोन्मुख सृष्टि की उन्मुख स्थिति, भौतिक, प्राण और मनो दशाओं की परिणाम गति सूचित होती है। मानव इन गति रेखाओं का प्रधान बिन्दु है। जीवन की रेखाओं का समीकरण है। समाज अतं न जानने के भौतिक मानसिक रेखाओं का संकलन है।

प्रकृति जीवन का बिंब है, जीवन का आधार प्रकृति है। प्रकृति में आने का परिवर्तन, मानव जीवन को प्रभावित करने की स्थितियाँ, प्रकृति को वश करने के मानव की शक्ति, पुरोगमन का तत्व, विज्ञान की दशा की आदि कल्पना की गई है। जीवन का प्रकृति से जो अनिवार्य सम्वन्ध है, उसकी योजना भी की गई है।

द्वितीय सर्ग :– पुराभूमिका से मानव में निक्षिप्त पुरानी स्मृतियों, प्राचीन रूपों, संप्रदायों, आचार रीतियों में अपने अस्तित्व के चिह्न प्रकट करने के

विविध रूप सूचित किये गये हैं। इनमें मानवों का पहला आवास, प्रकृति के आसपासों का पात्र अविस्मरणीय है।

तृतीय सर्ग :– इसके दो भाग हैं– एक, ऐतिहासिक शिखरों से एतिहासिक दृष्टि से, संस्कृति की परिणाम दशाओं में, हेतुगुणों से, विज्ञान शक्ति से समाज में रूपायित ऐतिहासिक स्थितियों की समीक्षा। खंडहरों के ऊपर प्रकाश से, परिवर्तन के गुण से, अपनी बलहीनता दूर करने के लिए नई शक्ति को समीकृत कर पुरोगमन करने का ऐतिहासिक अवसर उल्लिखित किया गया है।

दूसरा है – म्यूजियम् के अंदर। म्यूजियम् प्राचीन स्थान है जहाँ पर पुरानी वस्तुएँ सुरक्षित की जाती हैं। वह अमूल्य है। अव्यक्त चेतना में उपचेतना में निहित भाव जाल से चेतन दशा में रूपायित म्यूजियम् प्रतीकात्मक माना जाता है।

चतुर्थ सर्ग :– अभियान समाजाभिमुखी होकर मानव करने का प्रयाण रूपु इसके दो भाग हैं। एक समाज में विविध वर्गों के विभिन्न पार्श्वों के सर्वेक्षण है। दूसरा, आदर्श प्रकाश से अशांति से शांति पुरोगति के लिए होने के प्रयाण का अभिनव रूप है। संघर्षण, निरसन और प्रतिघटन से आगे बढ़ने का है।

पंचम् सर्ग :– मनस्तत्व सिनेरियो – मानव के मानवत्व की भूमिका पर निर्भर है। इस दृष्टि से जीवन में संभावित निशित अचंल और गह राइयाँ जो नहीं मिल जाती हैं उस अंतस्तत्व के विश्लेषण से प्रतीकात्मकता प्रतीत होती है।

षष्ट सर्ग :– तत्वोन्मीलन – भौतिक से अभौतिक को, अभौतिक से अतीत को अभिलषित करने की मानव प्रवृत्ति। मन के परितप्त में आत्मतत्व के साथ दिव्यत्व भी उन्मीलित हुआ है।

इस रचना में परिणाम की दृष्टि से नहीं वस्तु कथन पत्धति से बढकर, वर्णन पद्धति से समीकरण कर संदर्भोचित वस्तु ग्रहण करके, विविध भूमिकाओं के परस्पर सम्बन्धों से मानव जीवन चित्रित किया गया है। मानव संपूर्ण विकास ही लक्ष्य हे। उसके लिए संवेदन, अनुभव, सोच–विचार, पुरोगमन, लक्ष्य और दर्शन जोडे गये हैं। छह सर्गों में लिखित यह महाकाव्य मुक्त कविता प्रस्थान में उत्तम मुल्यों को एवं उत्तम लक्ष्यों को पुरोगमन के तत्व से आविष्कृत करने का प्रयत्न फल है।

विषय सूची

प्रथम सर्ग

सृजनोन्मुखता

प्रकृति जीवन बिंब

द्वितीय सर्ग

पुरा भूमिका से

तृतीय सर्ग

ऐतिहासिक शिखरों से

म्युजियम् के भीतर

चतुर्थ सर्ग

अभियान –1

अभियान – 2

पंचम् सर्ग

मनस्तत्व सिनेरियो – 1

मनस्तत्व सिनेरियो – 2

मनस्तत्व सिनेरियो – 3

षष्ट सर्ग

तत्वोन्मीलन –

प्रथम सर्ग

सृजनोन्मुखता

चैतन्य से पृथ्वी
सृजनोन्मुख हुई
जड के प्राण शक्ति के संस्पंदन से
स्थूल, सूक्ष्म दशाओं में जीव – गुण से
विशाल धरणी वदन में
मौन व्रत शिथिल हुआ;
महा गगन के फाल – भाग पर
चिरतंन रहस्य प्रकाशित हुआ।

जड मे छिपी जीव शकित ने
फूलों और फलों को जगाया।
प्रवेश किया जीव कण में दिव्य किरण ने
निहित हुआ शिशुओं में पूर्ण रूप।
सृजन सरण मनीषा से
स्पंदन गुण हृदय से
प्रकृति का सहज बिंब होकर शरीर
घर्षण में रहकर मानव विकसित हुआ।

पांच भौतिक शरीर में
दिव्य चेतन कुट्मलित हुआ

महित भावना के दल से
आनंद कला के स्पर्श से
अम्लान नित्य नव्य पुष्प हो गया।
संकल्प मधुमय परिमन हो गया

अशाश्वत शरीर से
सुंदर भौतिक रूप को
जीवन स्थिति में मन ने
रुचि और गति के लिए प्रेरित किया
संपूर्ण गुण रूप की तरफ़ लौटाया।

चेतना कूद पडी
चेतना ने आकाश, क्षितिज, अवनि इन सबको
निरंतर आवाहन कर आकर्षित किया
अणु अणु में शक्ति भरती
नये नये रूपों के लिए मार्ग खोलती।

भौतिक से अभौतिक दशा सहित
प्राणतल से मनोभूमिका तक
व्यक्ति – गुण से समाज तत्व तक
मानव को प्रयाण कराया;
दशा, दशा में भिन्न साधना के मार्गों से
चलते हैं तो मार्ग में
अंधकार सिरपर आ गिरता है,

नयनों से अग्नि – कण उछलते हैं
भगवान याद आता है।
भय से आक्रांत शुष्क हृदय ने
दिव्य बिन्दु के लिए मछल उग;
प्रेम से गगन, करुण से मेघ,
धारा से नदी हो जाना चाहा ।

सभी भौतिक आकार दुनिया में
स्थूल सूक्ष्म दशाओं में अवश्य
चेतनता – गुण की ओर उन्मुख हुए
मंद्र, मध्य, और तीव्र संस्पंदन के अंतर से।

प्राणी स्वच्छन्दता से जन्म लेकर
मनुष्य संवलित शरीर से मांसल होकर
स्निग्ध और उज्ज्वल होकर आकर्षण से
मति पख गई भौतिक शक्तियों से
कण कण में प्रसरित
वसंत किरण प्रभास से
छाया सी सोच के प्रिय – रूप से
आनंद अनुभव करने की जीवन सरणी उठी।

वास्तव तल पार कर
काल्पनिक जगत् के दर्शन करते
सृष्टि की परतों से उड कर
आत्म शिखर की ओर भाल उठा कर

अदृश्य लोकों के स्पर्श करने को
रहस्य लोकों की खोज करने को
प्रयत्न किया गया मानव से
उत्सव मर्यादा से तत्वावलोकन तक।

जो कुछ रहने दो प्रयाण शुरु होकर
आत्म–जीवन यात्रा में मनुष्य
आगे आगे बढ़ने के सिवाय
पीछे मुडने का नाम नहीं।

रक्त मांस धातुमय होकर
अस्थि, नसों औ जन्यु की धृति से
आयु भरे हृदय से
निर्मित जीव शरीर से
शक्ति ज्वलित हुई; तेज से भर गया।
रक्ति प्रकाशित हुई; विकास पा गया।

भौतिकाधार भूमि पर
मनो – जगत् निर्मित होने पर भी
भौतिकेतर गुण राशि से
अतीत दर्शित हुआ।

काल की नहीं स्वेच्छा
जीवन की नहीं स्वेच्छा
आत्मा के बिना
कुछ हद तक मन की,

सोचे तो
किसी की नहीं स्वेच्छा।

पवन अविच्छिन्न होने पर भी
अग्नि की अमित शक्ति होने पर भी
पानी का कितना सरण होने पर भी
भूमि का कितना आकर्षण होने पर भी
नित्य सम्बन्ध से
मनुष्य ने जीवन यात्रा में
भिन्न भिन्न गुण – कलन से
विशेष रूप लिया।

काल अखंड होने पर भी
अतराफ़ जो विशाल विश्व है
वब दृष्टि से परिमित होकर
सोच से संवृत होकर
चीर कर रह गई राहों से
खंड खंड कालों से
कई सीमाओं के जैसे मालूम हुआ।

आयु – लिप्त से
मृत्यु के छोर तक,
श्वास – चलन से

विलय – पवन तक,
स्थल – निवास से

विश्व – सीमाओं तक
व्यवहार जगत् से
अभौतिक प्रपंच तक
अनुभव गुण से जीवन
बंधन होकर, साधन होकर सत्य हो गया ।

(4)

उदय – पुष्प के जैसा
विकसित हुआ संकल्प
इसे संपूर्णता से स्वीकारने की शक्ति
साधना से मन को
उस पर आत्मा को और उसके बिना
भौतिक रूप को नहीं।

अणु अणु लडने के गुण से
जीवन समस्याओं से परिव्याप्त कामना
साधना के लक्ष्य का मूल हो गया है
व्यथित समस्याओं का उपाय हो गया।

हर वस्तु में है सत्य निक्षिप्त होकर
हर सत्य में है सौंदर्य निहित होकर
हर व्यक्ति में है अप्राप्त प्रपंच
हिम या निशि के आवरण सहित
हर मन में है प्रकाश – प्रपंच
आत्म – गुण से औ सामाजिक बंधन से

अंधेरे – मुशकिलों को पार करते सिलसिले
प्रच्छाया की गलतियों को हटाते सरलता से।

शरीरिक स्पर्श में सुख – तरंग – स्पृह से
मानव स्पंदन में स्नेह – शांति – करुणा से
प्राणी, मनुष्य, मानव और व्यक्ति अलग अलग
वैयक्तिक, समाजिक स्थाई में विभिन्न होते हुए।

ऐन्द्रिय – शक्तियों का वश होकर
एक पार्श्व भौतिक भूमि हुए तो
ऐन्द्रिय शक्तियों की स्वधीनता से
एक पार्श्व आत्म शिखर हो गया।

सूर्य के अरुण रश्मि मन से
चन्द्र के सुधा – कांति – हृदय से
भौतिक जीवन के विभागों से
अतीत तक अभिलाषा व्याप्त हुई।

कितने प्रज्ञान धन मति में भी
कितने ईदात्त गत्ति कर्म में भी
अज्ञान रहता बारीकी परत होकर
कभी वह मन की रक्षा करता
वरदास्त न होने के तेजः प्रसार से।
अंधेरे में रस्सी भयद सर्प होकर
धूप में रेगिस्तान जल – दर्पण होकर

विवेक हंस की याद दिलाते हुए
तत्त्व प्रपंच विनिर्मित हुआ।

एक प्रपंच के प्रभाव से
दूसरे प्रपंच का जन्म हुआ
पुरानी सूरत बाजू में जाकर
एक नया मुख प्रकाश में आया।

मनुष में सोच का
शिल्प हुआ भौतिक रूप;
प्रकृति में परिवर्तन का
रूप लिया जीवन – बिंब।

प्रकृति - जीवन बिंब

मस्तिष्क में खडा है भौतिक प्रपंच (1)
मन में पल्लवित हुआ अनुभव बीज
नयनों से जो देखा जाता उस पर सोच विचार प्रकाशित हुआ
नयनों से जो न देखा जाता उस पर कल्पना रूपायित हुई।

सिर पर न छू सकने का रवि चन्द्र मय आकाश
नीचे अवनि; प्रकृति विधा जीवन दृश्यों से
आशा निराशा में अनुभव की सीमाओं से
जो है उस से भी बढ़कर पा लेने को
जो न मिल पाता उसे पाने को
जो अतीत उसे अनुभव करने को
प्रवृत्त होकर पंचेन्द्रियों की अभिलाषा ने
अन्वेषण औ' साहस गति का मार्ग खोल दिया।

शब्द नहीं रुक रहें
अधर शब्दित होरहे हैं
हृदय सुना रहा है लय में
आयु बहती झरी होकर।

प्राण शक्ति प्रतिष्ठित होकर
शिखर भूत मस्तिष्क से
आकर्षण से मानव देह चला
पोषित होकर, सुंदर होकर भौतिक रूप।

(2)

दिशा – हस्त फैला कर प्रेम से
उदार हृदय से विशाल होकर
पुकारती परिमल – संज्ञा से भूमि
पवमान स्पर्श से, प्रकृति भूमिका से
मिट्टी से – नाना प्रकार के वृक्षों से अरण्य
समीकृत मानव वैविद्य का चिह्न होकर,
शाखा से – फूलों से फलों से वृक्ष
नव नवाशा के रूप का निलय होकर।

अमूर्त उषा
स्त्री भावना से सफुट होकर
हृदय में बजाती
रमणीय स्वप्न कला – तंत्र
रस होकर, लहर होकर, शिल्प होकर, वर होकर
प्रेम – गाथा – कीर्ति का रूप होकर
मन से संदेश भेजने की सौंदर्य देवता
यहीं पर रूपायित हुई सुम, लता नदी वर्तिनी होकर।

सजीव कल्पना में नवनीत शिल्प से
वास्तव चरण से सहचरि होकर
आर्द्र – हृदय – तल पर–
स्पंदन गुण – मूर्ति होकर
पुरुष के जीवन में स्त्री
उदय मूर्ति में उषः पार्श्व होकर।

नग्न चन्द्रिका से राग कला होकर
जीवन में अर्थ जगाया
मातृ – मूर्ति होकर, देवता होकर, शक्ति होकर
मानव जाति को अस्तित्व दिलाया।

(3)

सूर्य देव को
भू पर, वृक्ष पर, नदियों पर
जितना महा प्रेम है
क्या लगता है वह मानव पर नहीं?
सूर्य रश्मि से मानव
जो रक्षा चाहता है उसे देखते हुए
फिर भी
रक्त में सप्रसन्न बहने वाली
सूर्य किरण प्रसार का मतलब क्या है?
हृदय में कवोष्ण होकर जलती
किरण के बंधु गुण का मतलब क्या है?
सोच – विचार में अभिनव से जलती
किरण के पल्लव – तेज का मतलब क्या है?
रक्त में, हृदय में, सोच – विचार में
उदय के समय का सूर्य आयु बनकर
आँखों में, आशा में आनंद में
चन्द्र सूर्य हलाद भाव होकर
भोलीभाली मानवाकृति
आनंद – चन्द्र – कला की तरह
प्राण से लोक में प्रवेश पाया
अथल कण सा जिया।

सोच – विचार और अनुभव के कतन बदल कर
विविध वर्ण गुण रूप पाया।
आयु पूर्ण होकर निष्क्रमण पाकर
जड होकर मिट्टी में मिल गया।

सूर्य चन्द्र का भाग
दिवा औ निशा रहित
काल शकल जैसा बच गया
मूल प्रकृति के रूप से,
विविध पार्श्वों से
स्पर्श करता जीवित रूप को
हिलाती है बदलती है
समय, समय प्रकृति।
आखिर अपने में सब
विलीन करने के
प्रकृति के एक भाग जैसा
मनुष्य सहज होकर जिया।

(4)

ग्रीष्म आया ही नहीं
जो है वह नीर भाप बन ऊपर जाकर
काल में आने के परिवर्तन से
वर्षा – मेघ रूप सर्वत्र
सूखी विशाल – धरणी के भाग पर
रस धारा नव रामणीयकता।

वसुंधरा का अवंध्य करने की इच्छा से
मन को तर्पित करने की आशा से
चंचल वल्ली सौंदर्य से
नील मेघ रसाहंकार।

तूफान आता है वेग होकर तीव्र होकर
श्रेणियों में विस्फारित फण से
संपदा को डुबाता
प्राणों को हरता।
भीभत्स गुण शांत हुआ या नहीं
उसी भूमि पर जन का पुनरावास।
भीभत्स मुद्राओं से
भयंकर बनी यादों से भी
जीवन के गमन में
तब की ज़रूरते प्रधान होतीं।

मिशक्लों में दिल
पत्थर बन जाता, वज्र बन जाता
मिशकिलें हट जाने पर
ढेला बन सकता या नवनीत बन सकता।

ग्रीष्म की बाधाएँ निर्दयता से व्याप्त होने पर भी
मनुष्य में सुख छाया से हरा भरा वृक्ष
अंधकार की दशा में शोलों की स्थिति में
बिजलियों से पुरा गाथा का सघन मेघ।

हरा भरा वृक्ष, वृक्ष के नीचे बाँबी
वाँबी से उठ कर देखने का साँप
उसके अतरफ़ हाथ से पाई न पाई शाखाएँ
शाखाओं पर घूँसला
घूसले में पक्षी, पक्षी के लिए . .
यह कहानी हो जायेगी
लोक – गाथा की घटनाओं से
प्राचीन बिंब – मनो – रीतियों से
न छूटे मूल प्रकृति के मुखों से।

(5)

उदय – नदी के जल में खडे होकर
अंजलि में भरे पानी में
सीधा साधा सुकुमारता से उतार कर सूर्य
मुझ में भरे अंधेरे को हटाया;
नरम नरम किरणों से
दोनों हाथों को लेकर
फूलों की पंखुडियों सा गले मिलाया।

जल से बाहर आकर
हिला मेरे सामने उदय
अपने में मुझे मिला लिया।
न फूटे सो हँस–मुख से
होठों से न उतरी मुस्कान से
ढुलकता हल्का हल्का प्रकाश – हास से।

भूमि की ओर देख रहे तो
यहीं पर रहने को जी चाहता
आकाश की ओर देख रहे तो
कहीं कहीं ले जाने को दिल मचलता।

ओने जाने की राह में
कभी का पत्थर
वृक्ष के नीचे वैसे ही
बीच बीच में फूलों से कुंकुम सम पल्लवित होकर
किन्हीं हाथों से देवत्व पाते हुए
किसी मन में पुरानी स्मृतियाँ चमकाते
तृप्ति या कुछ तो शांति प्रदत्त करते ।

मेघ से बिजली के साथ
शंपाओं से, गाजों से
होने के घर्षण में और अशांति में
सुख के लिए अन्वेषण जारी है।

(6)

वृक्षों से बातें करती हैं बरफ़
हवा से कह रही है रोशनी
पवन प्रयाण में समय गति का चिह्न होकर
सोई रेगिस्तान में स्मृतियों को जगा रहा है,

बरफं से फिसलती किरणें
स्केटिंग करता जैसा है उदय

उदय किरण के प्रतिफलन से उपवन
पंख खोले सो मयूर सा है
हल्के हल्के कनेर के फूलों की झिलमिल से
सरोवर धीरे धीरे लहरों से हिलता है।
बरफ़ हट जाने के बाद
और अधिक सूर्य चढ़ा ही नहीं
हवा से सफ़ेदी सफ़ेदी रोशनी पानी पर
दूध पर बारीकी मलाई फूंके जैसा
पानी पर हिलती डुलती तरणि
बिंव जगत् को दिखाता दिन।

ऊपर से सूर्य की प्रति किरण ढूँढ रही है
पानी की धार के लिए, हरे पत्ते के लिए
जल बिन्दु को स्पर्श करने की सकपकाहट से
प्राणी के हृदय को आलिंगन में भरने के सवेग से।

अपना निज रूप आप स्वयं न जाने बिना
विविध पात्रों के मुखों से मनुष्य
रुक रुक कर हिली न डुली जीवन में
किसी नदी के किनारे पहुँच जाते दाह से ।

उदय अपनी आयु बढ़ाता आता है
पहर जीवन फैलाता जाता है
दिल में है न सोने वाली किरण
मुट्ठी में है न खुलने का रहस्य।

शिला वदन पंक्तियों से समय
प्रत्यक्ष हो सकता प्रयाण मार्ग में (7)
शिलाओं से स्पर्श करता, स्नेह से बोलता
मनुष्य नदी वन प्रवाहित हुए बिना नहीं रहना पडेगा।

शरीर में अनल छिपकर रहना ही बस नहीं
शक्ति बनकर परिसरों को परितेजित कर देना है।

जंगल में, जीवन में युद्ध
कितने कितने मार्गों में कितने कितने प्रकारों से
जिसका व्यूह निर्माण उसी का है
जिसकी प्रबंध विधि उसी की है

पिंजरे में सिंह जैसा
हृदय में सूर्य वैसा
इंदन में शक्ति जैसा
कण कण में किरण वैसा।

पानी के तर्राने की ठंडक में भी
मन सिकुडन जाता
सोच – विचार की किरण ठंडी न होती
हृदय अपना कवोष्ण न खो जाता।
प्रकृति – शक्तियों के वर्तन में
स्थिति से स्थिति तक जीवन है।
परिसर प्रकृति पर डालने का प्रभाव

देश देश की संस्कृति पर अनिवार्य है।
व्यक्ति – शक्ति – विकास से
समाज – शक्ति – परिणाम से
बदलने के भौतिक स्वरूप से
कितने उद्यान जीवन में भी
खडी प्राक् की रीतियों से
बच न पाता मानव का अरण्य तत्व।

निरंतर जन्मता बढता जंगल
विविध वस्तु औ, प्राणी के निवास से
बदलता नहीं अपना आटविक गुण
मानव में सुदूर सम्बन्धों से
कितनी महान संस्कृति में
रहता स्थान पाकर गुप्त रूप से अरण्य।

जंगल जलता है कभी
जलन दो,
समंदर जलता है अंदर ही अंदर
जलने दो,
ज्वालाओं को प्रेरित करने की शक्ति से
ऊपर ही ऊपर पीछे ही
आना है एक जलद, एक लहर।

उतने में सुनने में आती है एक ध्वनि विचित्र गति से
लिपट कर और एक ध्वनि को ठूँस कर

एक ध्वनि अन्य ध्वनि को बदलती है, सवाँरती है
एक स्थिति अन्य स्थिति को प्रभावित करती है।
.... परिवर्तित करती है।

वृक्ष से गिरने का पत्ता
ज़मीन पर खींचने के हल का गोल
लकीरों में गिरने के पानी की बूँद
बीज वपन के समय जल संरभं
नये नये सम्बन्धों से
क्रांति के लिए दूवार खोल दिये।
अब तब ग्रीष्म आस्फालन करता है
एक या आधा अग्नि कण कहीं बचे सो
अग्नि कणों को बीच बीच में गिराता
अन्य रुतु के आगमन में निर्भयता से।
इन्हें
मानते क्या मंदार पुष्प?
मानते क्या गुलाबी पुष्प ?
रास्ते से गुजरने के दानय्या या वीरय्या को
भस्म करेगा क्या? ऊपर गिर कर जलता क्या?
शरीर को संध्या से अलंकृत करेगा क्या?
क्षण को हिंसारुण मुख से अलंकृत करेगा क्या?

दुसरे दिन देखे तो क्या है हिम कणों से मिल कर
खेत में भेंडी के फूलों से, तुरई के फूलों से
हल्की मखमल सी धूप में

सफेद, नीली रंगों से मिले जुले
काल आ रहा है हेला सुकुमार से
अग्नि छिपाकर न दीखे जैसा
अणु अणु आर्धता से रसोज्वल होकर
स्पर्श करते हैं तो म्लान होने के रूप से
फिर भी वहाँ वहाँ
प्रकृति में बचकर
सामने खडे शुष्कीभूत वृक्ष से
बात करे तो मालूम होता शिला का मार्दव
बाजू के अरुण बिंब से
बात करे तो मालूम होती ग्रीष्म की आध्रता

(9)

पक्षी प्रयाण कर चले जाते हैं
एक जगह से अन्य जगह पर
मीलों मील सुंदर श्रेणी – यान कर
भूले भटके राह लौट आते हैं।
एक बार चलने की हवा से
वृक्ष के पत्ते छर् मर् करते ज्यों
पक्षी का झुंड रुकने का शब्द
जहाँ पर हो! वृक्ष पर हो !!
किसी वाद्य विशेष को याद दिलाया
किसी संगीत शिल्प को प्रदर्शित किया।

राशि समीकृत अंधेरी रात पर
चन्द्र कला श्रेणी के जैसे पक्षी

वृक्षों की शाखाओं पर विश्राम लेकर
उदय – किरण के पलकों को
छूम लेने तक ही उठ कर
उड्डीन यान से दिखाई पडा
मनुष्य जीवन यात्रा का चिह्न होकर।

(10)

अंधेरे में झुके हुए
मुख के भीतर झांक कर
कूदने का प्रयत्न किया,
छम् छम् की चन्द्र – किरणें ने
किया हमेशा प्रयत्न कितना !

सामने समीकृत वस्तु को
दूर दूर तक टोकर मार कर
हाथ बढाकर हस्तों में कूद कर
पुष्प – गुच्छ के जैसे गले लगाने के
शिशु जैसा है समय।

शिशु दशा में चंदा से स्नेह
अब भी कभी भी न छूटने का बंधन
हाथ उठा कर पकडने का चन्द्र बिंब
मनुष्य चाहने के संतोष रूप का चिह्न है ।

मन में स्थित शैशवानुभवने
जीवन की गति में झुक झुक कर देखा

आकाश में झिलमिल करते तारे
मेरी ओर दखते रखते रहते रात्रि में।

खोली गई खिडकी से हवा
रुक रुक कर कपडों को हिलाती
दूर दूर की प्रेम कथाएँ लाकर
कानों में फूँक जाती।

मेरे सामने खडी होकर प्रकृति
मुझ में प्रतिबिंवित करती एक एक मुख।
जीवन में विभिन्न स्थितियों को
स्मृति – गगन में खडा करती
स्तब्ध तल पर रात्रि
दूर दूर तक झर झर जाती।

अंधकार भयावह हो सकता
एक एक नक्षत्र धैर्य का केतन होकर
दूर दूर से आह्वान पत्र होकर
मनुष्य में समर शक्ति को लक्षित करती है।

नील जलद में शंपा जैसा
निशा बीच बीच में जाग उठती है;
एक क्षण फेंकी जाने वाली रोशनी से
छिपा यह प्रपंच दमकता है।

अंदर से गहरी नींद आती है तो
ऊपर से जागरण कूद पडता
नक्षत्रों का नग्न स्वर निर्भयता से
बाधा मय जीवन को निनदित करता
चाँदिनी में से, दीप काँति में से बढकर
अंधेरे में मनको खूब सुनाई पडता।

उदय नित्य नूतनता से हर दिन
अंधेरे से बाहर डालकर
मनुष्य को तैयार करता समर करने
प्रकृति से, व्यक्ति से, समाज से।

रात के समय प्राणि कोटि के
वश हुई अंधेरी जाल को (11)
उदय – किरण काट डालती;
किसी शंका रहित
बारीकी बरफं से प्राची दिशा में
जेल्ली सम प्रकाशित ऐसक्रीम कप जैसे
उदय – सूर्य – बिंब।

उषः किरण पंक्तियाँ
बरफं की परतों पर खडी होकर
लगती हैं ज्यों ऊन के कपडे धारण किये जैसे,
लताओं से फिसलती, लटकती
छोटें बच्चे खेलने के जैसे हैं

वृक्षों के ऊपर रुक रुक कर फुरसत से
आराम लेती जैसी दिखती हैं।

दूर से बरफं की परत से
सुंदर कांति विन्यास से
सोच विचार का रूप होकर प्रवाह
अप्सरस्तनुरोचि को याद दिलाती है।
सूर्य – रश्मि से जगत्
सुवर्ण – पिंड के समान है,
उडने के लिए तैयार
स्वर्ण – हंस के समान है।

कितना सुंदर है
कितना मूल्य है
काल गुजरे बिना न मालूम पडता
अवर्ण है! विवर्ण है! सुवर्ण है!
प्रार्थना में निमग्न
वृद्ध के जैसा है पर्वत
कितने दूर पर होने दो
लगता है बहुत समीप है।

बरफ ने चिपकाये कोमल करों से
अवनि के हृदय – क्षेत्र पर
कल के धावों का उपशमन किया
आशीः पुंज से आदित्य रूपलिया

प्राची की उदय सूर्य – कौंति
सरोवर में, नदी में, समंदर में
अंजलि से छोडे जाने की
मंत्र – पूत जल धारा सी है।

दिन भर चमक चमक कर सूरज
मधुर निश्शब्द के अंदर सरक गया
थोडे से आराम की अभिलाषा कर हर रात।
किसी हरी छाया को! किसी मधुर हृदय को !
बजाने के लिए श्रुति भरे तंत्रियों से
सितार वाध्य के समान है समय।

काल राग की अभिलाषा से
मनुष्य को प्रतीक्षा में रखता है (12)
उदय हुआ तो सायं के लिए
रात हुई तो दिन के लिए ।

रात की बात कहने की ज़रूरत नहीं
कभी पार करना वश की बात नहीं
बाढ़ भरी प्रवाहित नदी के समान
सामने रहने की निश्शब्द हिमानी के समान।

समंदर पर नाव में प्रयाण जैसा
सब को भूले जैसा कर दैती रात
प्रपंच को रहस्य में डाल देती

निज रूप पर अरूप का आविष्कार करती
निशा चन्द्र – बिंब का प्रसन्न वदन प्रेम से
क्षितिज के भुजाओं के ऊपर से देखती है
किसी वृक्ष या मेघ को मिलने वाला नहीं
लगता है कि सोच – विचार को मिल गया।

रात में जम गये निश्शब्द प्रपंच को
फोडने का प्रयत्न किया गया
मुझ में कुल्हाडी से टुकडे टुकडे होने पर भी
इतने में जम जाती पत्थर बनकर औ अंधेरा होकर

आदित्य के हृदय स्पर्श से
आयुध के बिना निमित्त मात्र छिन्न होता है
काल को परिवर्तित प्रकाश
अधरों पर सरकता है
नयनों में चमकता है
शरीर पर नर्तन करता है।

रागपूर्ण कांति
मानव को अलंकृत करती है
प्रपंच पर आवाहन कर
अग्नि को शुभाकृति देती है।

मानवता – मुग्ध – तेज
अंधेरी जंजीर से छूटे

मृत्य – प्रच्छाया से हटे
मुझ में बसता चिरंजीवि होकर।

श्रम से, सोच विचार से, अनुभव से (13)
किसी के देखे स्वप्नों के आकारों के जैसे
कुसुमित तरु शाखाएँ प्रत्यक्ष होती हैं
नाना प्रकार के सुंदर समाज का चिह्न होकर।

चेतना में आशीः पुंज में
सवितृ – किरण अवतरित होती है
सृजन वन कपोल – पालि को
स्पर्श करती हृदय की शोभा से

दिवा की रोशनी में तैरते दिन
समंदर में अज्ञान – पोत के जैसे
बिना रुके बेपार के विधान से
बढ़ जाते दृश्या दृश्य से
समुद्र के किनारे लहरों से हवा
रुण पर व्याज वसूल करती है
समुज्वल चमकने का आकाश जल कर
भस्म होने संसिद्ध होता।

कितना चंचल हुए तो क्या? समंदर की
लहरें आगे बढ़ना ही,
मग़र पीछे मुडने का नाम नहीं लेतीं

कितने वेग से चले तो क्या? झंझा का काम
सर्वस्व ध्वंस कर देना ही है
मग़र सृजन गुण से जीने का नाम नहीं लेता।

नदी में पानी सूखने के जैसे
वृक्षों से पत्ते गिरे जैसे
मानव मे प्रवाह सूख जाने का
जीवन मे हरापन लुट जाने का
समय आ कसता समाज में
प्रकृति से संवदित होते परिवर्तन से।

मरुस्थल सैकत की परतों से
नदी में, जलधि में, लहरों पर हवा
प्राचीन पृष्ठों को पलटाती आई
नवीन पृष्ठों को खोलती आई
लहर पृष्ठों की समाप्ति नहीं
मानव – इतिहास की समाप्ति नहीं।

सोच – विचारों में आकाश उतार कर
अंजलियों से रोशनी सरकाते
बाहर पग धरने के युव – शक्ति – समूह
पुष्पित गुलाबी होकर
होते हैं हर युग के भावी प्रतिनिधि।

संध्या के क्षण (14)
उधर ज्ञान के चिह्न नहीं होते
इधर अज्ञान की सूचना नहीं होती
ज्ञान की परतें न छूटे अज्ञान के
अज्ञान की परतें आच्छदित ज्ञान के
संकेतहैं।

यात्रियों के ढोकर
कितनी ज़िम्मेदारी से प्लाटफार्म पार कर
उत्साह से और एक स्टेशन
पहुँचने की रेल के जैसे सायंकाल।

देखते हैं तो
दो तरफं से
प्रयाण – दृश्य–भूमिका से
क्षितिज में हिलने का संध्याराग
प्लाटफार्म के दो चोरों से
आमने सामने बढ़ते
यात्रियों के हृदयों के जैसे।

अहंकार शिखर पर
पुष्पित गुलाबी होकर
उत्साह वल्ली गति के लिए
विकसित छमेली होकर।

सोच – विचार में प्रकाशित कला रूप होकर
स्वप्नावरण छूटने की वास्तव स्थिति होकर
मुझ में प्रपंच
रात, दिन
निश्शब्द, शब्द
विनाश, सृष्टी
द्वन्द्व समाकलन से
प्रकृति परिवर्तन में एक भाग हो गया
जीवन – सरण से प्रयाण हो गया
मुझ में
मुझ से,
जीवन
प्रकृति का बिंब।

द्वितीय सर्ग

पुरा भूमिका से

अज्ञान गलाते (1)
उपाय चमकाते
मनुष्य के मस्तिष्क में शक्ति
विवेक से हो गई मेधा ।

सफ़ेदी से अनेक वर्ण रीतियों में
वस्त्रों पर आकर्षण बढ़ गया,
नयनें वरित मेघ शकलों से
दिन ही चाँदनी में रूपायित हो गया,
सूर्य के स्थान में चन्द्र की कांति
भ्रमा बहुल भंगी विन्यास से।

जलधि में मछलियों को जाल में फँसाने के
जंगल में ज़ंतुओं को जंजीरों से बाँधने के
चातुर्य से शिल्प मालूम हो गया
साहस से अनुभव बढ़ गया।

हल ने भूमि के हृदय को
पुचकार किया करुणा से, प्रेम से
समीप भविष्य के
हरे फल की महती आशा से।
कर्षित भूमि अपने में

रहस्य छिपाई रखी है
अणुमात्र न प्रकटित हुए।

सूखी सूखी मृत्तिका के अंदर से
अणु अणु नव सृष्टि की वेदी होकर
न रुकने की क्रांति जीवन हेतु होकर
मानव–शक्ति को परीक्षा के लिए खडा किया।

दूर दूर से नील मेघ
आँखों के अंदर उतरे जैसे हिलते
बोझ भरी पानी की गठरियों को खोल कर
आँखों के सामने छोड दिया ठीक।

नदी सुंदरी वस्त्रांचल छोडे बिना
हवा चली हेला तत्परता से
नवालोकन से
जीवन हृदय से।

(2)

कृषि से, अवनि – हृदय फल से
संचार की सुस्थिति लग गई
यंत्र–प्रवेश से जीवन में
क्रिया–शक्ति का वेग बढ़ गया।

जिधर देखो मनुष्य को
अपने कार्यों का अंतिम फल,

अपने बेपार का धंधा
अपना रास्ता ही भला दूसरा रास्ता न मालूम हुए जैसे।

सोच–विचार की प्रभा से
विज्ञान के प्रपंच में
उत्सव गुण की घटनाएँ
अमवसी के भवन में नक्षत्र–कलाएँ।

अज्ञान की शकलों से
विज्ञान के चरणों से
उत्साह के क्षणों पर
जीवन–यात्रा–संरंभ।

खेत से कर्मागार तक
श्रम जीवन के विश्व–बन्धु का दृश्य।

(3)

जंगल में शेर भागा कूदते
पीछे मुड कर बिना देखे अति भयंकरता से
गगन पर हंस अपने पंखों को फडफडाते गया
सुदीर्घ प्रयाण में आकर्षण से।

निम्न दशा में हिंसा, भय
उन्नत दशा में शांति, प्रेम
वह न करने के मानव में पुरा भूमिका के रूप
कभी की हों प्राचीन जीवन–स्मृति–रीतियाँ।

जहाँ वहाँ पहाड अनुद्विग्नता सहित खडे होकर
युग युग से कितने विषयों के साक्षीभूत होकर
ऊपर से जीव नदियाँ अविच्छिन्नता से प्रवाहित कराकर
विश्व जीवन का बंधु–दृश्य प्रकट करते।

विनोद हो, विजय हो, रक्षा का उपाय हो
एक के पीछे एक होकर
होड में पडकर वेग से, जोर से
निशान साधे आयुध के समान मानव।

जंगल से खेतों को पार कर गाँव तक
सर की बेला औ नदी–तट की सीमा से अवधि तक

मानव शरीर के नसों के समान सुकीर्ण होकर
आदि अंत न पाने की पगडंडी पृथ्वी पर
प्रयाण धारा का रूप (लेकर है।)
विश्व–वन्धु की सूत्राकृति (में है।)

(4)

कल का अस्तित्व आज बदल कर
कल तक पुराना होकर विस्मृत हो गया
शुष्क, जीर्ण, शीर्ण होकर भी
बीज–भूत होकर बच गया शक्ति–रूप।
खंडहरों में दब दब कर
कांटों से बाहर निकल कर
सुम–हृदय पाने की चाह कर
अशांति से लडना जारी रखा।

मिट्टी से अच्युत–पत्र ज़मीन पर
गिर कर मिट्टी में मिल गये।
सूखे जाडसे न टूटी जडों ने
उचित समय की प्रतीक्षा की।

रेती के टीलों से
दब दबायें पाँव से चल कर
आँधी–रेती से निकल कर
सूखी मिट्टी गिरते शरीर से
अमूल्य वसंत के लिए
ऊँटों पर सवार होकर अन्वेषण;
ओयासिस नज़र आते ही
बस उडने का प्राण जुड गया।

(5)

बादलों से निकलने के
सूर्य की किरणों के जैसे
बाढ़ से विमुक्त
आशा–सहित–प्राण जैसा
जीवन की मुद्रा से जीवन में
जब का तब पुनराविष्कार ।
कहीं कहीं से निकल कर
कहीं कहीं परिव्याप्त होकर
अनागरिकता, नागरिकता जीवन–धृति में
सजीव होकर रहता आरण्यक–मूल।

किसी कानून से न बांध सकने वाली आत्मा से
जिस किसी के लिए तैयार होने की जीवन–गति से
प्राण–मूल की रक्षा के लिए
मरण–रात्रि के भय से
उदय देखने की आशा सहज रहती है
रात में यदि सहज ही मिल गये तो बात ही अलग।

ज्वाला रूप से
शोलों के दर्शन करते
फूलों को स्पर्श करते
माला–रूप में
अलंकृत करते
अर्पण करते
मनो रूपों में पुरा–रूप
वन–सम्बन्ध से
दूर दूर से
जीवन को प्रभावित करते।

(6)

समाधि के ऊपर वृक्ष ने फूल गिराये
मानव के जडातीत शक्ति की प्रेरणा होकर;
भौतिक दशा के भीतर से मानसिक तृप्ति से
प्राक् मुकुल को स्फुटित किया अपनी यादों से।
प्राचीन शिला युग से
आधुनिक के अणु युग तक

विविध दशाओं में मुख के रूप
अपनी शकल सी शकल वाले मानवों के कार्यों से
अवसर पडने के समय आगे आते
हिलते, बातें करतें
अपने अपने पात्रों को बिजली के समान
नाटक पद्धति में निभातें
मन की परतों में जीवित किया।

काल समंदर के ऊपर लहरें
फडफडाती रही इतिहाय के पृष्ठों के जैसे
दिन में सूरज
रात में चन्द्र, नक्षत्र गण
प्रकाश–दृष्टि से झांक कर
पढ़ने के प्रयत्न से
अपूर्व और अपुरूप के
अक्षरों के चित्रों की लकीरों से
छोटे बच्चों के नोट बुक के पृष्ठों के जैसे
देखे तो अंदर ही अंदर आनंद जगाते।

शाखोपशाखाओं से
विकीर्ण होकर अनुबंध से
विस्तार पाने के वृक्ष हो या जीवन हो
तोडमरोड छूटकर; ऐंठन पाकर
कसीद, काढे बिना, बुने बिना,
शोभ नहीं और संपूर्णता नहीं।

स्मृति–गवाक्ष खोले तो
शास्वाओं, पत्रों और पुष्पों से
भावी स्वप्न सा आकाश
खंड खंड होकर
वर्तमान चित्र सा क्षितिज
ऊँचे कान्वास से
ज़मीन के ऊपर अनुभव से फिरने का प्रपंच
अन् देखे दृश्यों से चकित किया
मश्ष्य के लिए बिजली के जैसे अर्थ से
मन के लिए कोरक जैसी अभिलाषा से।

बाधओं के रंगों से रंगत शालू
लटका कर भुजा में बिना छोडे
रात में प्रकाशित नक्षत्र
दिन में न दिखाई पडने के ग्रह
भाग्य–राशि के संकेतों से
प्रयाण को विपदाओं की आदत पडी।

शरीर पर न ओढे सो कपडों से
मन खुले सो विचारों से
विषाद और वैक्लब्य को
छाया में लपेट कर, गुफ़ा में फेंक कर
मृत्यु के किनारे चलते ही
आनंद के किनारे पर पहुँचने के लिए
उडने का साहस लेकर है आशा–रूप।

(7)

परंपरागत संस्कृति के वंदनवारों में
नाश न हुए सो प्राचीन–कांति–शिखाओं से
प्रपंच भर झुंड के झुंड
मानव नई नई आशाओं के चिह्न।

उदय ही उछली किरणों से
स्पष्ट–जागरण से विकृत होकर
वास्तव–महित जीवन ने
अपनी विस्तृति और गति दिखाई।

रात में अनायास ही आया स्वप्न
उदय आकार गुण रहित होकर
स्मृति में सुरक्षित होने से पहले ही
विकट विस्पष्ट होकर अदृश्य हो गया।

स्फुट होकर दिखाई पडता दिन
पात्रों से, घटनाओं से बार बार बदलता हुआ
विविध वर्ण समीकृत कांति से
चलन–चित्र संकलन–रूप होकर।

दिन भर थकावट से शिथिल होकर
अलस सुबह से पहले ही थके मुख से
बीच रास्ते में दिखाई पडे अनेक मुख
स्वप्न–संसिदुध आँखों से।

मनो–शाखा पर रूका हुआ पक्षी
दिनभर फिर फिर कर
रात होने तक लौट कर
परिणाम रहित धवल–कांति विभूति से
नयनेंद्रियों को आकर्षित कर
निशा–छाया में खडे होकर
कितना औचित्य पूर्ण हो गया।

अतराफ़ पत्ते, फूल और फल
कुछ है फिर भी नहीं जैसा ही है
निश्चल और निर्व्यापार सा
है काल विराम के गुण से।

नील समंदर से
उडकर आया
प्रयाण की जयेच्छा–रामणीयकता से
मानव के अछूते वज्र संकल्प को
याद दिलाया
पुरा भूमिका से।

मानव का चलना नहीं रुकता
विचारों के नयनों की कांति से
सूर्य–दीप्ति से, चन्द्र–कीर्ति से
घन वन जन हृदयों से

(8) कितना काल गुजरने दो
असमाप्त मार्गों से
गढढे में कदम गिरने दो
पहाड से पाँव फिसलने दो
कष्टों में म्लान होने दो
नष्टों में क्लांत होने दो
आशाओं से पल्लवित तत्व से
तेज से नव नव विकसित रूप से
मानव का चलना न रूकेगा
मानव का मन न झुकेगा।

काम में, गुफ़ा में, भय–भार के नीचे
दबते मानव को दैव की ज़रूरत पडी
जन–पद से आकांक्षित शांति–सुख के लिए
अन्वेषित मनको अतीत की जरूरत पडी।

कांटों को, कंकरों को हटाकर
सस्यश्यामल या उद्यान रंजित के
प्रसार करों के आशीः–स्पर्श से
अंजलि में भरी भक्ति औ प्रेम से
(9) मानवता विकसित होने की मनोज्ञ दशा में
विचार बदल गया अन्य पार्श्व में।
यह देश क्या? वह देश क्या?
कुत्सित भाव रहित अंतरंग से

वर्ण भेद, ह्रस्व–दृष्टि वक्र गति रहित
तत्व–भावना–गगन उतरा मनुष्य में।

तप्त–शुष्क नदी तटों के मध्य
नया जल स्पंदन के जैसा,
शिशु मुख गगन पर
सीधे–सादे मधुर बिंब के जैसा
उगादि–पर्व आया विभिन्न रुचियों सहित
प्रकृत पुरा–जीवन परिमल–गुण सहित।

नज़र आने दो न आने दो
ऊहा–शाखा से कोयल का मधुर गीत
विजली जैसा चमकने के पुरा दृश्यों में
पल्लव होकर, पुष्प होकर, फल होकर आया उगादि–पर्व।

भस्म–क्रोध–राशि से
राग–मंजरी–मुख उदित होता है।

दरखाज़ा खोलते ही
प्राचीन काल में दहेली से छूटी छायाएँ
भीतर अब प्रकाश बन कर आई
स्नेह की चाह कर, रिस्ता सोच कर।

वृक्ष पर सरासरी कूद कर
लता पर सरलता से आकर

यह समय किरण मय
उसने सुम मधु वदन का अन्वेषण किया।

(10)

आधी रात बारह घंटे सोचकर
प्रायश्चित से किसी ने गुडबै कहा,
प्रातःकाल छह बजे तक सामने आकर
आनंद से किसी ने स्वागत किया।

स्मृति में भाएप जल चित्र से
हिम मय शिखरों से
दूर होकर वर्ष पुराना हो जाता है।

ओठों पर प्रर्थना के पवित्राक्षरों से
सूर्य के सामने अंजलि में मंत्र–जल से
नदी में कटि दघ्न होकर रहे सो मुझमें
ज्वाला निश्शब्द सहित वसंत सा हिल रहा है
अंजली भर त्याग धन से
हृदय सारा प्रेम मय होकर
समर में ऊपर उठने की शांति को
पकडने के उत्साह भरे करों से
वृक्षसे, लता से वसंत होकर
आध्र–तेज से उगादि उतर कर आ रहा है।
दृशा वीथि खडी हो जाती है सौंदर्यमय होकर
ऊपर गिर कर एक होजाता है।

यह – प्रपंच निवास गृह
यह हिलने डुलने का जन समूह
यह खडा गिरि शिखर
यह झरता प्रवाह रूप
मेरे शरीर पृखी
सृजन रूप में भाग।

निशा के बाद निशा
मनो विश्रांति के निलय होकर
उदय के बाद उदय
मनो चेतना की प्रेरणा होकर
कभी पल्लवित होने दो
कभी पुष्पित होने दो
उगादि पर्व वर्ष भर में एक बार आता है
प्रकृति शक्ति के पुरा बिंब का केतन होकर।

तृतीय सर्ग

(इतिहास के शिखरों से)

सारा संसार नदी तटों के मेदानों में (1)
प्रथम प्रस्फुटित मानव संस्कृति
हिली डुली मनो पटल पर
कीर्ति – शिखर पंक्तियों से विशिस्ट – विश्व होकर।

बिन्दु अन्य बिन्दु से मिलकर
रेखा अन्य रेखा को पारकर
कार्य पर प्रतिकार्य से
राजनीति की रणगति से
मनुष्य मनुष्य का अनुबंध
ऐतिहासिक समाज जीवन ।

प्यास मिटाने को नदी में उतरकर
अंजली में लिये से पानी ने
समझाया कि जीवन कहाँ आरंभ हुआ
अन्वेषण कराया कि इतिहास कहाँ शुरु हुआ ।

नदी से बाहर आते ही
देश, वेश, प्रांत भाषा सहित
विविध चटाकृतियों में आकाश जैसा

अन्य जीवन का दृश्य प्रत्यक्ष होता ।
अब विचारों के स्वरों में
हृदय सुनाने की है भाषा अलग
जाति बंधु सीमाचंलों से
मन खींचने का है चित्र अलग ।

इतिहास जीवित रहता है ही
खंडहरों में ही नहीं
परंपरा की गाथाओं में ;
ग्रंथों में ही नहीं
जीवन की साधना ओं में
मनुष्य के जीव कणों में
जाति की मनो रीतियों में ।

खंडहरों में बची हुई दीवारें
गिरी हुई, टूटी गई शिला–पंक्तियाँ
शत्रु – शक्ति को, समय – क्रोध को
निर्वेद से याद दिलाने के आकार ।

जंगलों से, पहाडों से नदियों से
शिथिल रुप में इतिहास का सम्बन्ध
आज का नहीं । कई प्स्थानों से
जुड हुए प्राचीन युगों का है।
प्राण समझ कर करुणा दिखाने का कार्य नहीं
शतु का लक्ष्य केवल अपना विजय

शिल्प, कला, संस्कृति इनसे क्या काम?
शत्रु का चिह्न ध्वंस; है वही प्रधान ।
एक युग से दूसरे युग में
सरलता से बदलता है काल;
शिथिल भग के निर्माण – शिखरों से
गर्व से उठा संस्कृति – मुख ।

(2)

साहसिक कृत्यों से वीर गाथा ओं ने
इतिहास को स्वर्णमय किया,
एक दिशा से दूसरी दिशा को
उत्साह कीर्ति – पक्षों से पहुँचा ।

शिलाओं को सौदर्यमय किये गये पर्वतों में
हैं आराम–गृह, आलय, विशाल शालाएँ
शिल्पीकृत साधारण जन – श्रम – सौंदर्य से
भौतिक रुप से, अंतर्गत लक्ष्य से
थके हृदय से, शांत रस से
झुके मन को पहुचाँने के उत्साह सुदीप्ति से,

लकडी, शिला, मृत्तिका के निर्माण
जीवन को सुखमय किये थे
प्रयोजन सहित परमार्थ को
अनुभव चकित किये थे ।
युग युग की शिला श्रेणियों में है
शिल्प कला रमणीय होकर समाज

इतिहास में जीवित रहने के संस्कृती – तत्व से
वास्तविक शक्तियों के बीच आदर्शाकर्षण से।

(3)

एक तरफ़ अभिमान
दूसरी तरफ़ शौर्य
पतत्रों से इतिहास
समय–शिखा के तल से
वीर–पथ के संचार से
ऊपर उडने के विमान के जैसा।

आवेग से तैरने के एकांत की सहायता में
किसी स्वर समाकलन ध्वनित होता संगीत होकर
किसी वर्ण समीकरण रुप धरता चित्राकृति होकर
किसी हृदय – बिम्ब आर्थ्राकृति होकर।

भूख से तरस कर आहारान्वेषण के लिए
युक्ति, श्रम, शक्ति अनिवार्य होकर
अंधेरे में रह रह कर रोशनी में
रोशनी से फिर अंधेरे में
दिन दिन आगमन और निष्क्रमाण।

ज़रा – भार से मृत्यु अनिवार्य होकर
सुख के अभाव में दुख प्रतिपन्न होकर
भय छोडने के उपाय की आदत पडी।
शांति पाने का मार्ग मिल गया।

चीरे बम्बु ने निशित मुख से
बाण होकर वीर विहार किया
खंडित होकर बम्बु ने नव योग से
वेणु बनकर आनंद बरसाया।

स्वाहा में मुक्त – झरी संचरण से
ओंकार में भ्रमरी झंकार से
हंसी में, रुदन में, बात में, पुकार में
नाद तरंग – कलन– चलन।

पद से मुक्त होकर राग
चमेली का कोरक विकसित पुष्प होकर
भार से हृदय विमुक्त होकर
हल्का होने का वल्ली रुप।

(4)

बिन्दु से शब्द शुरु होकर
बिन्दु समूह सेहित आगे बढ़कर
चलकर, उतरकर, उठकर, गिरकर
टेढे, भींगे मोडों से
नाद शक्ति साकार संगीत होकर
वेणु, वयोलिन, एक क्या ? दो क्या?
कई कई वायु–तंत्र वादूय–विशेष,
शब्द से, ध्वनि से, नाद–तत्व के लिए
स्वर हृदय से साधना में अन्वेषण
नयनों को भाष्प कलित करते
हिम–हृदय–शिला को स्रवित करते

गले में प्रवेश किये सो आकाश
शब्द गुण से स्वर संचार
साधना से संगीत बनकर
कला–दिव्य –हृदय हो गया।
मूलाधार से सहस्रार तक
चलित, सरित, प्रवहित होकर
इन्द्रिय जगत को परवश करते
आत्मानदं लक्षित हुआ व्यक्ति में
समाज को दिव्य संस्कृती गम्य हो गया
भौतिक तल से दिव्य दशा तक
उन्मिषित करते मन को ।

जन के गलें से आग्नि निर्झरी होकर
निनाद होकर उत्साह लहरी पताका होकर
आने वाली क्रांति की हुंकृति हो गई
समाजिक चेतना की झंकृति हो गई ।

लहलहाने के राष्ट्रीय झंडे की ओट में
तरलित वीर कृतियें की स्मृतियाँ ।
जाति और देश के ममकार से
पवित्र गुण और सुंदर भावना से
अपनी जाति और देश, प्रेम करने की शक्ति
व्यक्ति में चुम्बित किया मनो गगन ने।

समाज सौभाग्य को लक्षित करने की चेतना से
इतिहास रुपायित हुआ विविध दशाओं से
राक्षस कलेवर दग्ध होगया;भ्रांति में
व्यक्ति में स्वानंद से सामाजिक श्रेयफल ।
निडर से और, निशा रहित रण–गति से
आयुध के ऊपर शांति – मंत्रचिह्नों से
सीमाओं और, देशों के पार कर जैत्र यात्राओं ने
जाति में खडा किया उत्याह– शिखर ।

देश देश की सीमा –रेखाएँ खींचते, मिटातें
हिंसा से, आयुध के बल से
आक्रमण के विजय– गर्व से
परजित पराभूतों के दृश्यों से
बढ़ने का देश–इतिहास ने
पाया कीर्ति–शिल्प ।

जीवन में आयुध रक्षा– साधन (6)
(5) बाद में प्रशिक्षण से वीरता का अंग बना
आयुध की नव्यता से समस्या जटिल होकर
अस्त्र–बल विजय का आधार बना।

गढे सो लोहे के सलाकों के ऊपर से
प्रजा को चलाते थे ;
तलवार की नोकों पर दृष्टि – रखाकर
नृत्य कराते थे ।

मानवता – नगार – दूवार भूल कर
अख्य – भाव–मानव मृग जैसा होकर
हिंसा करते फिरते थे
आग्नि वल्ली होकर जोते थे ।

युद्ध – भाव के ज्वलन से
पलास फूल खिले ज़मीन पर
नियंता ओं के अहंकार से
अनल शिल्प बन गया क्षितिज ।

स्वेच्छा के लिए ज्वलित होते समय
समता के लिए लडते समय
शांति के लिए व्यथित होते समय
कुछ हद तक आयुध ने
इतिहास में परिमित स्थिति में
पीडित जन–गण का पक्ष लिया।

एक एक ज्वलद्वह्नि व्यक्तित्व ने
अंगारों से शांति–पथ का ख़्वाबू देखा
दीप होकर अंधेरे को प्रकाशित किया
उदय होकर समाज को जागरित किया
दासता के लोक का स्वेच्छा–चिह्न होकर
पीडित मानवावलि की अभय–मुद्रा होकर

(7)

सिर उठाये अलंकार–वलय से
क्षात्र घनीभूत क़िलाएँ
समर शक्ति के पौरुष–खंड
शिथिल कला के ऐतिहासिक रूप
रूधिर रेखाओं से अलंकृत रूप
टूट फूट कर बचे कुछ आदर्श
उतार कर पार्श्व में रखी पगडी सी क़िले की दीवारें
खंडहरों से सटक कर रहे सो आवासों में
ऊपर लटकने की चमगादड
नीचे फिरने के मूषक
हैं मानव संसार बंधनों से
परिवर्तन हीन जीवन–चिह्नों से

फाल–तल पर छिटकती चाँदनी
अंधेरे को पोंछने की निशानियाँ
प्रचंड तूफ़ान में हवा चले तो
कहीं कोई दीवार गिरने का भय।

शिथिल किला की भुजाओं के ऊपर से
हर दिन कर्म–साक्षी का प्रयाण
परिवर्तन रहित समाज का साक्षी बनकर
कई वर्षों से खडा हुआ है वट वृक्ष।

अपनी अपनी दृष्टि से उसका दर्शन कर
अपने अपने पात्र के अनुसार प्रवेश कर

अपनी अपनी युक्ति से जीवित रह कर
अपनी अपनी शक्ति से ज्वलित कर
इतिहास के निर्माण में क़िले को
अपने जीवन के लिए आप निर्मित कर लेते हैं
दीवारों को खडा कर
कंदकों को खोद कर।

इतिहास हमेशा बिंबों सा, बिंबों सा
काल को अलंकृत करता विविध रूपों में
विषाद खंड भी स्मृति में
मधुर बिम्ब सा आकर्षित करता है।

काल गुज़र गुज़र कर
इतिहास पुराण रूप में साक्षात्कार पाता है
निशित–हेतु–धारा में टुकडे टुकडे होकर
फिर मिल जाता है मनो–भाव–स्पर्श से
अन्य रूप में हवणित होते।

मेघ आँसू बहाता है
गाज़ों से डरता है
क़िले का जीवन–मात्र
हरेपन से नयेपन से दूर होने पर भी
मानव शक्ति में हरि कीर्ति के अति समीप होता।

हाथ पाँव में पडे, पर न दिखाई देने के झंझीरों से (8)
बात करने के अनल हृदय को
मृदुल–भाव हिम से स्पर्श करते
विमुक्ति पाने की वेदना से
व्यक्ति–शक्ति को पार करती सोच
अगिन–चरणों से चलती है सामाजिक होकर।

हिंसा, आंदोलन या हत्या के लिए
तैयार होने के मन की पूर्व–स्थिति
किसे दिखाई पडती? किसे जान पडती?
सहेतुक इतिहास को खोजने से जान पडती?

आँसू में छिपे अंधकार को
कौन से दीप जगमगायेंगे?
वह अंधेरा कोई आयुध बन सकता
ज्वाला मुखी स्फोट भीषण बन सकता।

स्पंदन रहित शरीरों के मध्य (9)
समाज में जीते समय
अनुभव होता, बाजू से गुजरने के स्तंभों
से बात करते जैसा जीवन।

कितने बंजारों में भी क्यों न हो
ऊपर उडने वाले पक्षी के मुँह से

गिरे सो बीज
बर्षा से भीग कर कभी कभी अंकुर बन जाता
अंदर से हर्षित जीवन से
ऊपर से हरे भरे शरीर से
जीता है, हंसता है, बढता है
पवन के कथा–वचनों से परवश होता है।

कितनी अशांति में भी क्यों न हो
कहीं खोया शांति बीज
पल्लवित होने की आशा करना सहज है
संघर्षण, युद्ध से न बचपने के समाज में।

मानव धर्म के प्रतिनिधि
ईसा के शरीर पर रक्त के दाग
सहन भूमि पर अग्नि वल्लिकाएँ
फिर विकसे प्रेम–कुसुम
बह गया सर्वत्र शांति–सौरभ।

वज्रशरीरों से, बल के सुदृढ बाहों से
मुष्ठि–घात प्रतिघातों से आरंभ हुए सो युद्ध
आयुध भेधों से, व्यूह निर्माणों से
हमेशा चलता है समाज–गति का भाग होकर।

चमेली की कली के समान जन्म लिए सो मानव
जाते जाते अदंर अंदर अग्नि–पर्वत होकर

तूफ़ान के लिए संसिदूध समंदर होकर बसता
विलग विलग और परत परत होकर

सानुकूल हुआ तो
स्वयं एक विजय स्तूप बन जाता
नहीं तो
प्रशिक्षित मृग जाल को कतार में
बाहर छोडने के सर्कस के समान
अपनी विधि समाप्त कर
सरासरी अंदर चले जाता।

शिथिल बंध सिनेरिया के मध्य
कल के संग्राम के लिए निमग्न होकर
आज के सौभाग्य को छोड कर
बाधा सहित जीने को संसिद्ध।

युद्ध समाप्त हुआ या नहीं
उपनिषत् मंत्र हो
(10 बुद्ध का धर्म–चक्र हो
ईसा का क्रास हो
मुख–फलक पर प्रति फलित होता
क्षणों को शांति–कला से प्रकाशित करता।

फ़ौलादी परों से (11)
उडकर स्वेच्छा विहंगों ने

किले के पत्थर की पगडी ध्वंस की।
फ़ौलादी पावों से
उतर कर स्वतंत्र विहंगों ने
शिला बाहों को तोडकर टुकडे टुकडे किये।
युग के महा ग्रंथ में
नया अध्याय आरंभ हुआ;
जीवन के महा पथ में
नया लक्ष्य प्रवर्तित हुआ।

दिन–ब–दिन परिवर्तित इतिहास ने
पताक शीर्षकों से
अपेक्षित किया नया व्याख्यान
पुराने पृष्ठ पलट कर
शोध के योग्य होकर
स्मृति की परतों में दब गये।

बुझने के आग्नि कणों के जैसे
पुरानी पीढी मिट रहे तो
अग्नि शिखाएँ होने की समिधाओं के जैसे
नई पीढी ने अपना स्थान बना लिया।

अवनी के जीवन में
क्षितिज के अनुभव से
नव नव स्नेह कांति में
युद्ध को भुलाये सो शांति की कांति।

शुभ होकर, पवित्र होकर
आशापूर्ण होने को
उदय की प्रतीक्षा में
निशीथ की अपेक्षा रहती।

(12)

हाथी, अम्बारी के शौक की शान में
हय रिंखा मुख घट्टन की लय गति में
तलवारों की चमक दमक में
अभी बाकी है
एक मुकुट के बिना।

किसी को फाँसी पर चढ़ाने को
किसी को मिट्टी में मिलाने को
किसी पर ईर्ष्या दिखाने को
बनाता नहीं समाज किसी सरकार को।

शांति, युद्ध जीवन के प्रस्थान में
एक के बाद एक आने वाले ही हैं
तो भी
स्वप्न से वास्तव को
वास्तव से आनंद को
जीवन चाहता अथक प्रयाण
रातों को पार करते दिनों को तैरते।

सोने से या लोहे से
जिस किसी से निर्मित क्यों न हो
हाथों की पाँव की बेडियों ने
स्वेच्छा को लुटाया ही नहीं
प्रयाण–लक्ष्य को शासित किया
समाज–शक्ति को बदल दिया। (13)
व्यक्ति में नाश रहित
स्वतंत्र प्रपंच है
कठिन शासन बंधन–धारा के
वश न होने की आत्मा रमणीय होकर
भय लहरी होकर हिलने की शासन–शक्ति
समाज–श्रेय–भावना से
सामान्य की अभय मुद्रा हो गई।

स्नेह, बैर, शांति युद्ध से
राजनीति ने मोड दिया
इतिहास के अनेक मुख
मुट्ठि में मूर्तित संकल्प ने
जाति को उत्साह–शिखर पर खडा कर दिया;
संकल्प में प्रवाहित कृषि तेज ने
देश को नव्य–हरित दृश्य से खडा कर दिया।

बाधाओं से दरार उठा समाज को
करूण से आर्ध्र–होकर स्निग्ध हो गया;

हरी भरी सृजन शक्ति को अवसर देने को
निगूढ़ प्रेम समालंकृत हुआ।

रात पूर्णिमा चन्द्र बिंब होकर
सूरज के समांतर में खडे होकर
प्रति–फलन–किण समूह से
कला–विज्ञान–कांति के इतिहास से
मानव कई कई के, प्रतिनिथि हो गये
सबको अपने में विलीन कर।

युद्ध में हुए सो घाव (14)
वीराभिमान और शांत वेला
पार्थना और पवित्र समय
तन पर दीप बन चमके।

ग़रीबी और भूख से
उठे सो अंगार के स्फुल्लिंग
आँखों पर दीप कलिकाओं के स्थान पर
मिनी सूर्थ ग्रहों का सृजन किया।

अधरों पर वास्तव
स्मित कलिका या अभिशाप बनकर
आँखों में वास्तव
सरो वदन या समुद्र–हृदय बनकर

मुख पर वास्तव
संन्ध्या वह्नि या निशा मेघ बनकर
कपोल तल पर वास्तव
रक्ति–रोचि या भक्ति–स्फूर्ति बनकर
अनुभव की रेखाओं से मिलकर कालने
मुख में छिपाया इतिहास का रहस्य।

म्यूजियम् के भीतर

(1)

हाँ होने के कार्निवाल में
रे स्थान के बारे में
हलने डुलने वाला मुझ से भी
ानते ज्यादा देखने वाले।
ब कहाँ पडाव बदलता पता नहीं
ब कौन सी इच्छा सुलगती पता नहीं।

ब किसी भगवान के कंधों पर नहीं मैं
 खुद पार कर रहा हूँ प्रयाण निज पैरों से।

तराफ़ लहरों के जैसा
र दूर पर बादलों के जैसा
ले ब्रश के वाटर कलर के चित्रों के जैसा
जनगण अब नये दृश्यों से।

लने के काल में परिवर्तन से
चलने के स्थान पर सबर से
खने की आँखों के सामने गर्द की परत
र दूर तक बिना रूके चलते हुए
र कहीं पर उडने के पारासूट जैसा।

गली समूह के आंदोलनों से
धुनिक समाज के आवेगों से

मानव सम्बन्ध के मानसिक बिम्बों से
इस उत्सव में अनेक दृश्य परंपराएँ
इस प्रपंच में अनेक वस्तु विशेष
मन में खुले म्यूजियम को याद दिलाते।

खैर, प्रस्तुत पर आजायें
म्यूजियम के सामने स्क्वेर
चारों ओर से पार करने की
उत्साह मय जन–गण श्रेणियाँ।

गले से रव सुनाई दे रहा है ज़ोर से
पग चलते हैं पंच कल और मिश्र कल की लय से
सह जीवन की सामाजिक शक्तियों से संश्लिष्ट होकर
अवनि साँस लेती है कुछ कुछ आफ़त सहकर।

लोगों को छू छू कर गाय
आहार के लिए खोजती बढती
कोई उसे मारने को दैयार नहीं
वह आने पर बाजू हट जाते हैं।

सामने बसस्टांड के पास
शिशु से बात करने का हृदय लेकर
झुकी हुई शाखा के नीचे है मातृमूर्ति
वृक्ष, मनुष्य, समाज के बीच

न दिखाई देने के सूत्र बंधन से
न सुनाई देने के ध्वनि–चित्र से।
बाहर प्रपंच है
शब्द–चित्र फैल कर
अंदर का प्रपंच है
निश्शब्द दृश्य भरकर।

ज्यों ज्यों समीप होते त्यों त्यों अपने प्रपंच को भावित करते
है अति आकर्षणीय होकर म्यूजियम्
एक एक दिशा से एक एक प्रकार से
सुरक्षित वस्तु समुदाय को सजाकर

आटविक युग से नागरिक दशा तक
कोने कोने से आकर जम गई वस्तुएँ
जो समाज के लिए कभी कभी आवश्यक जान पडे
प्रयोजन गुणों से विविध शैली गुणों से
मनुष्य के लिए आवश्यक सामाजिक सम्बन्धों की रीति से
दशा दशा पर फ़रक पाने के लक्ष्य से प्रवृत होकर।

दिन में गरम रोशनी में झूमते
रात में ठंडे अंधेरे में फूलते
मुझ में प्रपंच के इतिहास का प्रतिनिधि होकर
वस्तु में भी, मानवता चिह्न में भी है म्यूजियम्।

आईनों में, अलमारों में, दीवारों पर, तख्तों पर
सिलसिले में सजाई वस्तुएँ
मिट्टी की, कांच की औ, लोहे की विनिर्मित
ये सब सामान्य की श्रम साध्य कला कृतियाँ

कामानाएँ
छिपे निश्शब्द नेत्रों में प्रतिबिंबित हुई
सीमा राहित सागरों में प्रयाण पाई
सजीव कल्पना से जीवन में।

इस म्यूज़ियम् में आने वाले
हर एक अपने आप नये होंगे;
देखते ही परिचित के लगते
युग युग के इतिहास में सम्बन्धित मुखों से।

एक एक वस्तु एक एक कथा चित्र से
दीवारों, तख्तो औ अलमारों को सजाया
गाँव, नामों को जाने अनजाने मन से
नये पते पर आये अनुभव से।

म्यूजियम के बाहर सजीव शिल्प
अणु अणु मय प्रपंच के स्वप्नों से
हर व्यक्ति में एक एक म्यूजियम्
भौतिक, मानस, तात्विक कला श्रेणियों पर

(2)

वास्तविक रूपों से ऐतिहासिक चिह्नों से।
दिन के बाद दिन जैसा
दरवाजे से और एक दरवाजा
बंद दरवाजा़ खोल कर वक्त पर
हर व्यक्ति को स्वागत करता भीतर आने को।

शिशु की तरह आनंद के करों को बढाकर
विश्व के चारों कोनों से आये
अथितियों को संभावित कर सब को
कितना भी हो समाप्त न होने के द्वारों से
कितना भी देखो और बचे सो म्यूजियम की
प्रति वस्तु दिखाती है जीवन में प्रकाश।

यहाँ पर प्रकाश और स्वेच्छा समवर्ती हैं
बंधित माला सदृश नहीं
अंधेरा हरा वंदनवार होता है
भयद गुहा मात्र नहीं होता ।

अंधेरा कभी समाप्त नहीं होता
कमरों के कोनों में पडा रहता
अंधेरा किसी दिन छूटता नहीं
जाड सा था पहाड सा खडा रहता ।

कहीं कहीं गुडियों के समान
फिसल गये मनुष्य

कई दिनों के बाद राह में नज़र आकर
आगे खडे होने से जो आनंद मिलता, उसी आनंद से
इस म्यूजियम में मैं ।

निज जीवन लेकर आगे बढ कर
पर जीवन में प्रवेश पाये जैसा
इस म्यूजियमू में प्रवेश ।

किसी को किसी के लिए सीमित नहीं
किसी प्रदेश को भी क्यों न हो चक्कर काट कर आ जाता
किसी वस्तु को भी क्यों न हो अपने में लीन कर लेता
निज में जो सुरक्षित रखता उसे दिखाता
किसी व्यकित को भी क्यों न हो नर के शक्ति को पहचान कराता ।

देह, प्राण, सर्वस्व
समर्पण के लिए संसिद्ध वीर गण
नामों से, वीर गाथा चिह्नों से
भूत सारा यहाँ सुरक्षित किया जाता
वर्तमान–चिह्न से अलंकृत किया जाता ।

किसी अल्मारा को खोलने दो
किसी वस्तु तक पहुचँने दो
वर्तमान से भूतकाल तक
भूतकाल से वर्तमान तक

यातायात दृश्य सौंदर्य से
विविध श्रेणियों में चलने के मनुष्यों से
एक एक युग मन में दिखता है
अंतरंग को स्पर्श करता और बात करता

(3)

शरीर पर एक दो घाँवों से
इतिहास में वीर पद चाहने वाले
जाने के स्थान के वास्ते आँखें खोले पास से
वांचित स्वप्न के लिए आँखें मूँदे दिल से
म्यूजियम जाने की राह में
मिल जाते अनेक उत्साह के वर्णों से ।

स्वप्न की प्रतीक्षा में आशाएँ गिरकर
तत्व पथ में प्रवक्ता बन कर
म्यूजियमू के अतराफ़ राहों पर
शांति–चक्र होकर मिलते रहते

गिर गये सो पत्ते फिर टहनियों से न जुडते
चाहे न चाहे नवीन पीढी आ जाती,
सफ़ेद, लाल, काले किसी वर्ण के
गत क्षण फिर कभी नहीं आते किसी स्थिति में ।

किसी किसी समय छोडी हुई रेखाओं से
हमेशा असमाप्त वर्ण चित्र

इस म्यूजियम का रुप
समाज में एक भाग ।
इतिहास में कभी कभी के
आवश्यक सम्बन्ध के बंधनों से
खोटे सिक्के के लिए
विश्व में यह सुरक्षित निलय
और अत्यतं गौरव स्थान ।
इसे बाजार में ले गये तो
कोई वस्तु मिलती नहीं
इसे गला कर नया रुप दिये तो
इतिहास न सहता
समाज न क्षमा करता।

जिस साधन से रुप सँवार लेता है
उसे छोड जाती हर वस्तु सरलता से
किसी बाजार में खडी हो जाती
किसी स्थिति में रह जाती
किसी म्यूजियमू में अलंकृत हो जाता
काल गर्भ में विलीन हो सकता ।
म्यूजियमू के नाम से जागरित होता इतिहास
मनो दर्पण में बिंबित होता पूरा रुप
हृदय पाता है संस्कृती–गंध
वास्तव से अलग होकर सोच
जरा देर तक पाता स्वाप्निक रुप
वर्तमान शिखर से

भूत का समीक्षण करते ।
दुख से अशान्ति से
अतीत – आत्म–तृप्ति के लिए
आनंद – स्पर्श से क्षण
दीपित होकर, चलित होकर उठे ।

म्यूजियमू में व्यवस्थित वस्तुओं को देखती
मनमें सुरक्षित रुपों के वहन करती
एक जगह नहीं रुकती दृष्टि
उत्साह से चलती दिशा दिशा में ।

अंदर मन में
खुला है म्यूजियमू
युग युग की पीढियों के वस्तु–प्रपंच से
पग पग पर परिवर्तित जन–चेतन–रुचि से
समाज – सम्बन्ध की रक्षा करने के इतिहास से
व्यक्ति से अनुबंध स्पंदित होने के मूल्यों से
धरती की परतों को फाड कर आगे बढने के
प्रवाह के जैसा है मुझ में इतिहास
कण कण को महिमावान करते इतिहास से
अवनी–फाल–भाग को गर्व से चकित करते
लहर के बाद लहर आती जाती है तो
प्यास से ज्वलित होती इच्छा मन में

सूर्य–प्रकाश जैसे आदर्श से
मेरे लक्ष्य को प्रकाश देकर
प्रकाश में दिखाई पडता म्यूजियमू
बंध लिये सो अमूल्य संग्रह रत्ना कर

म्यूजियमू के सपनों को उतर कर आने के बाद
समाज है श्रेणियों से, पडावों से
श्रम–सुंदर–क्षणों से
जन–इतिहास के क्षणों से ।

चतुर्थ सर्ग

आभियान (1)

(1)

जनता में व्यकित का गला
स्वर होकर, लहर बनकर;
व्यक्ति में जनता का रव
धुनि होकर, कथा बन कर
है एक के अनुबंधन से दूसरा
है एक की भूमिका से दूसरी ।

कितने दिन गुजर गये
जल होकर श्रम बहता
मानव के अंदर की मिट्‌टी से
सिर उठाये सुवर्ण पुष्प
वास्तव को समाविष्कार करते
समाज को समर्पित होते!
कितनी विश्रांति चाहिए इस निशा को
कल एक नई शक्ति जुटाने को!

दीवारों को छेद कर परदों को फाड कर
अंधेरे को भगाने के साधन से
पीढी पर पीढी को सिंहासन गिर गये;
सिर पर से ताज पलट गये।

मेघ संदोह से आकाश
प्रतीक्षा भरी आँखों में प्रतिफलित हुआ
हाहाकार से, आँसू के स्पर्श से
कुछ तो थोडी सी प्यास बुझाने को

मुख में लाल लाल भूख औ, प्यास से
आँखों में सुलझाये शरत के पंखों से
आशा– स्तंभ पर सामान्य का कथा – शिल्प
भय बंधन से, बिजली से दिशा चक्र ।

शब्द हृदय से जीवन के चक्र
प्रतिफलित होने की निश्शब्द यवनिका
छिन्न भिन्न होती है
अग्नि से या हिंसा से
बाज़ार में विस्फोटन से
नैराश्य आयुध होकर ।
स्वर्ग में देवता–गण के अतराफ़
कल्पना में चक्कर काटने के मनुष्य
अब जीवन की सचाई के बारे में
आधिक सोचते हैं।

कितने महान व्यक्ति
विविध चित्र–रेखाएँ खींचते
जीवन के रुप के रिक्त को
परिपूर्ण करने को प्रयत्न करते हैं।

(2)

अहंकार बजि जनित होकर
मानव होकर है मनोज्ञ जीवन
छाया स्वप्न से
कर्म फलाकर्षण से ।

आरंभिक जीवन का साधन
आरंभिक मानव आयुध
भय से रक्षण पाने को
है नुकीला शिला शकल

शक्ति –शिखर – प्रदर्शन
लक्ष्य – भेदी – अण्वस्त
क्रिया–शक्ति पर विश्वास से
भूमि–पथ के सम्बन्ध से
मनो नयन की कांति से
पलक न गिरने के आकर्षण से
अंधेरे में चाँदनी जैसा
चाँदनी के प्रकाश जैसा
अनुभव से जीवन
ामाजिक – प्रगति–मुख
सब किस्मत का फल" सोचे तो
चलने का है यह, प्रस्थान ।

रती के भ्रमण में
ीवन के रण में

(3)

आकर्षण? विविध शक्ति का प्रसार
वस्तु – गुण बंधन से प्रेरित है ।

धन, कीर्ति, प्रेम औ' युक्ति का
अन्वेषण जीवन बनकर
हास में, रोदन में
अभ्यर्थन की प्रर्थिना में
काल ! स्वर गति से
चला प्रयाण में !

आधी रात के निष्क्रमण में
बुद्ध का उदय – हृदय,
फेंके जान के पत्थरों की वर्षा में
ईसा का हर्ष – वदन,
हत्या करने की मृत्यु–शिखा को
हृदय में पोटली बाँधने के
महात्मा का अमृत–भाव
और किसी में ? यह आत्म गंध !
पाप न जानने के भोले शुशु में
स्नेह–धारा से इतिहास को
पवित्र करने के प्रेम में ;

आँखों में धुनी दृश्य
वेदना में अग्नि – धीर्ति

साँसों में ग्रीष्म – वीचि
बाधा में निशी – मुख
आविष्कृत जीवन
चैतन्य विभासित।

वास्तव में सीमाओं को
आह्लादमय किया;
जीवन में रह जाने के खंडों को
एक ही चित्र से अलंकृत किया ;
मानव मानव के सम्न्धों में
लहर लहर होकर मानवता राग।

(4) सत्व प्रकाश से उदय होकर
रजो – दीप्ति से विस्तार पाकर
तमो जल में विलीन होते हुए (5)
अनुभव चुंबित होकर व्यक्तित्व ।
किसी मानव का चित्र खींचने दो
उस में अन्य मनुष्य का आकार
अंदर अंदर अग्नि होने पर
नहीं रहेगा शरीर का अस्तित्व
किसी मिट्टी से हो शरीर
जिस किसी के लिए भी हो, आधार भूमि ही है ।

अभिनव होकर उदय होने का दिन
घावों में अदृश्य हो जाता है;

निशीथि मात्र धरत्री
ज्योत्सना स्निग्ध हो जाती है ।
भय दूर करने के
धैर्य ज्वलित करने के
पर पीडन दूर करने के
अभियान की आवश्यकता है ।

कौन सा भय है ? कौन सा बंधन है?
कौन सा पीडन है ? कौन सा शासन है ?
प्रजाहित के भिन्न
इतिहास –गति रूपित ।
भूख से भी
महानीय नहीं आकाश ;
क्रोध से भी
महोग्र नहीं अनल;
सहन से भी
सुदृढ नहीं अवनि;
करुणा से भी
आध्र नहीं मेघ ।

एक से एक प्रयाण में
दस बातें करें बिना
मालूम न होता हृदय,
दस गज न चले बिना

मालूम न होता लक्ष्य ।
राज्य से अधिकार की विस्तृति
मजहब से परलोक दीप्ति
इतिहास में विजय के भाव–संपदा से
जीवन में सिल सिले क्षेत्र पंक्तियाँ । (6)

कुल, मजहब, जाति, कुटुब, देश
बल, कवच, आकर्षण और आवरण होकर
भौतिक शक्तियों का स्थावर होकर
सामाजिक – संस्कुती का क्षेत्र हो गया ।

भौतिक औ, मानसिक चरणों से
विविध दशा ओं में समाज
नीचे से लेकर ऊपर तक
पीडा और दबाव के भागी बन गया ।

परिव्याप्त दास्य की पीड़ा से
उड उड आकर स्वेच्छा स्फुलिंग ने
मानव में जगाया स्वातंत्र्य,
फूटे से दया त्याग से
प्रसरित हिम–करण ने
घाव से जलन के शरीर को
किया अमृतायमान ।

समता, विमता विभेदों को
ठीक करने की गडबडी में
उगने के अंधकार को
हटाने की कोशिश में
जिसका आयुध उसी का है ।
जिसका संकल्प उसी का है ।

देह नाश होकर अंत में आत्मा एक होने पर भी
शररि रहने तक जीवन
सीमित गुण औ' वर्ण से पात्र विशेष
जिसका व्यक्तित्व उसी का पर असंपूर्ण.

निश्शब्द से शब्द समुद्र के भीतर
जीवन प्रयाण कर समाज वन कर
एकांत से जन –चेतन के भीतर
शरीर हिलता जनता बनकर ।

आँसू से आवेगों से
सामाजिक संस्कारों से
मानव जीवन से ही (मिलता)
पीढी दर पीढी को नई शक्ति ।

जंगल से बाहर निकल कर
दूर दूर होकर प्रकृति से

प्रत्येकता से समूह तक
जन – पद छोडकर नगरों में प्रवेश
मानव एकांत प्रकृति से मिलन को
समय नहीं रह गया ।
अंक के बाजू में अंक आकर
मूल्य बढ़ता जाता विचित्र से
मनुष्य से अन्य मनुष्य का सम्बन्ध
समाज शक्ति को बढाता अनूह्यता से ।
आरोहण के पीछे आरोहण से
अविच्छिन्न श्वास– क्रम ने
सृजन की प्राण – शक्ति;
खडा की आयु–स्थिति ।

श्वास से फिसल जाता है क्षण
मुड कर देखे बिना
नयनों के छोर ढलने के भाष्प–कण के समान
भाल से गिरन के श्रम–बिन्दु के समान ।

पद – छाप दिखाये तो बस
उधर ही चलते हैं पाँव
उधर चलते ही दृष्टि
नये रास्तों का अन्वेषण
अमृत–भाव धैर्य से
आगे बढ़ने को शरीर ।

किसी विज्ञान – प्रपंच
किसी तत्वालोकन
मन को देने की प्रकाश– दृष्टि से
आत्मा में मृत्युंजय की कला से
सामने चलने की इच्छा सहज है
इच्छा से आवृत काल ही जीवन है ।

अरण्य का किरीट सिंह–वदन जैसा
चौरास्ते पर रेड लैट
अरण्य का हृदय हरिण रुप जैसा
पार्श्व में पुरोगमन – ग्रीन लैट
बीच में समाज–निर्माता की मूर्ति
त्याग और सोच के लिए दिशा – निर्देश है वह
भय से द्वेष से
मन की विमुक्ति का रुप है वह ।

(8)

कब किस पर गिरकर ज्वालाओं से
शरीर जलाने वाली, घाव कराने वाली
अनजाने वैषम्य – स्फुलिंगों से
ज्वाला सी सामने आ जाती विषम–स्थिति
बाहर बाहर जलता है दिन
अंदर अंदर भभकती रात ।

खिडकियों सहित बंद किये गये
मौन–मुद्रा न छूटे सो गुह के सामने

हवा लहराती है कर्फ्य के डर से
नई वार्ता कानों में भरने के झुंझुलाहट से।
अंधेरी की घाटियों में फंसे शरीर से
चाँदनी की रेती में धंसे हुए पाँव से
कभी बाहर न आने की दुस्थिति से
रास्ते में सामने आये शिथिलीकृत जीवन अनेक हैं
दरार उठे हुए क्षेत्र–मुखों से
स्पर्श न जाननेकी शिला – मूर्तियाँ बनकर
किसी म्यूजियमू में पहुचाँने के लिए तैयार होकर ।

हलचल न दिखाई न सुनाई देने के
बरफ़ जैसे जम गये क्षणों पर
न मन, न रीति रहने की स्वेच्छा से
आयुध पर अखंड विश्वास से
बाज़ारों में छिप छिप कर फिरते हैं
छाया भरे अग्नि – मुखों से
अंगुलियों के नाखूनों में ब्लेड के छोरों से ।

आँग्वों से झरने के आँसू–जल का
न कोई कुल है, न मत है
मुख पर प्रस्फुटित वर्ण–चित्रों का
न जाति है, न देश है ।

सब बराबर हैं
मानव प्रेम के

(9)

शरीर के घावों की जलन
शत्रु और मित्रों के लिए बराबर ।
बाजारों में नाना प्रकार के आंदोलनों के बिम्ब
हक के झंडे की लहरियों से
स्वर में नये ब्लेड की नुकीली से
भभक कर उठे निनाद से
रास्ते भर तरंग – चेतना से
हिलने की अंगार वल्लिकाएँ
रास्ते के दो तरफ़ शिला–शकलों के जैसे
खडे हुए जडीभूत मूर्तियाँ ।
मानव के हाथ का आयुध
समाज में साधारणतया
सांकल पहनाने के लिए ही
मगर
विमोचन के उपयुक्त नहीं हुआ ।

मूट्ठी में हुकुम का भय दिखा कर
समाज को चकित किया था
म्यान में प्रेम छिपा कर
हिंसा से रक्त – चित्र खींचा
ज्वलित क्षणों से
सामाजिक चलन
अनल प्रवाह के समान ।
क्षण – पृष्ठ बदले बिना
अनुभव ग्रंथ आगे बढे कैसा ?
आँखें खोले बिना

कान सुने बिना
मन सुने बिना
मन ज्वलित हुए बिना
कल्पना हिले बिना
समय कैसा अन्वर्थ होगा
प्रतिदिन प्रयाण कैसे बढ़ेगा।

व्यक्ति से सामाजिक तत्व से
अनुबंध, सम्बन्ध और आवश्यकताओं से
काल सहित जीवन भौतिक औ' मानस होकर
बदल गई इतिहास की गति दशा दशाओं में ।

दासता के बंधन से, निरंकुश – नियम से
हाथों में, पाँवों में अंधेरे की जंजीर प्रकाश–सर्प्श से
विलग होकर ग़ायब हो गया
यह प्रकाश (10)
सहस्रार्चि से आने का नहीं
बिजली से आवतरित होने का नहीं ।
लोह–द्वारों का मुँह बंद कर
पत्थरों की ऊँची दीवारों के हाथ बांध कर
निश्शब्द खडा
जेल के सामने निगरानी करते
कठिन शिला मूर्ति सदृश ।

शब्द नज़दीक नहीं आसकता
हिलने डरता है पग

कोने में पडे वाद्य–विशेषों से
शून्य पडा विषय–मंच ।

जेलों में सुरक्षित आशा – मुख
लोहे की जंजीरों में बांधे गये
छ्ल छलाते आग्नि कणों के जैसे
हंतक, चोर, दुष्ट
सँवोर आदर्श रुप बनकर
शीशों में बंद किये तूफ़ान जैसा
देशभक्त और तीक्षण – वाद ।

रंगीन स्वप्नों में क्रीडित
उन्मत्त, निरंकुश गण है अलग ।
अलग जेल की ज़रुरत नहीं
अपने आप में एक जेल
शरीर के भीतर बढ़ने के अग्नि – वृक्ष ने
शाखाओं उपशाखाओं में विस्तार पाकर
रंगों की ज्वालाएँ पुष्पित कीं
शास्त्र– हिंसा के फल फकाये ।

मानव –रक्त– कणारण्य में
सिंह है, हरिण है
एक सोचने में ही भय बंधुर है
एक हृदय में प्रेयो सुंदर है,

(11)

नसों में बहने के रक्त में
अग्नि प्रदेश होती है तो उग्र तत्व
विलय रुप अलंकृत कर देता,
भीभत्स दृश्य चित्रित कर देता।
साहस ज्वाला होकर चलती आगे
विवेक छाया होकर पीछे पड जाता
भय से संभ्रांति–मति होकर
आयुध एक ही शरण्य होकर
पत्तों की ओट से शाखाओं के पीछे से
शिशु – हृदय के नाम पर छुरी फेंके तो
शरीर पर बाल–सिंह मुख होकर
घाव बाहर आते हैं
विलयारुण भीभत्स कीर्ति के चिह्न पन होकर
हाथ नवेत्थित कलि होने पर भी
बाधा अग्नि कण फेंके बिना नहीं रहती ।

(12)

स्वेच्छा स्वातंत्र्य के लिए
आंदोलन या विप्लव,
साहस गाथा मय इतिहास में क्रंतिवाद जगति में
जन शक्तियों के लक्ष्य का चिहन है
गुण औ' सवेग विजय।

लेपट कर बलपाई दीवारों के हाथ
जहाँ के वहाँ टूट कर बिखर पडे
रक्षा–मूर्तियाँ टुकडे टुकडे होकर

बंद पडे सो लोहे के दखाजे मुँह खोल कर
स्वेच्छा प्रिय होकर
स्वातंत्र्यानंद से
शब्द ने प्रेम से बुलाया
खतरा, भद्रा की मुद्राएँ छोड कर
हृदय में मुकलित रहस्य
विशाल गगन सदृश हुआ ।

हर काम में चलन में शब्द
जीवन शिल्प से
संगीत स्पर्श से
सुंदरता से प्लावित होता है ।

श्रम शक्ति को प्लावित करने का दृश्य
स्नेह शांति से
क्रांति चरण युग से ।

(13)

हवा के पीछे कूचने की
हवा से अपना रूप मिटाने की
कोई मेघ पंक्ति नहीं जाती ।
प्राचीन प्राचीन ऐतिहासिक मूल से
दिशा दिशा में व्याप्त शाखाओं से
अदृश्य मान प्राण शक्ति से
दृश्यमान युग परिवर्तन से
मनोज्ञ मनीषा दृति से
संस्कृती परिणाम तेज ।
अलग अलग परिणत रुपों से

शाखा शाखा अवसर से अलग होकर
स्वार्थ में भी जरुरी केअनुबंध से
खडी है जाति एक रुचि–चिह्न होकर ।

समुद्र जल की आध्रता से
गिरींद्र शिखर धैर्य–कवच से
पृथ्वी विभाग शरीर से
प्रवाह जल चलन रक्त से
जाति ने पाया व्यक्तित्व ।

परिवर्तन गुण रम्य होकर
मानवता – जीव – धारा से
कल मिले सो अर्थ अलग
आज मिलने का अर्थ अलग ।

जन – सत्ता से बंधुर होकर
जाति – समिाएँ बदलने पर भी
खंड खंड की जन श्रेणियों के
समाज का लक्ष्य एक ही है ।

(14)

विकसित मनो नयन
दर्शन करता जीवन दृश्य
देश की समिाएँ पार कर
जाति वलय अतिक्रमण कर
श्रम–सौंदर्य से जीता है
मानव–विश्व–संस्कृती रुप

हर मजहब में श्रेयो भावना
जीवित हरती है सदा;
वृक्ष को बल देने की जड के जैसा
हर व्यक्ति में मानवाता
किसी न किसी में रहती
किसी पुष्प या किसी फल को अवसर देने ।

रास्ते में कितने लोगों के पदचिह्न
एक में एक मिल कर
किसी समय के पग की निशानियाँ
संघटित होकर अब इस प्रयाण में ।

प्रयाण अनंत है
विचार निरंतर है
हेतु, नव्य शक्ति का मार्ग हुई तो
आदर्श, लक्ष्य का निज साधन है ।

मनुष्य मनुष्य की मानवता का स्पंदन (15)
सहस्र तंत्रियों पर संगीत है
स्वर, लय, पद, गति से
झन्, झन् झकृंति से

दिन की कांति के निष्क्रमण से
है रत्रि मानव मानव के मध्य;
है गगन को चन्द्र–बिम्ब
टेबिल के ऊपर ऐसक्रीम जैसा ।

हर कोई हाथ फैला कर
हथियाने के प्रयत्न में है ।
मानव मानव प्रयाण करने का
लौकिक–पथ एक होने पर भी
समय, गमन, वेग के सम्बन्ध से
मजिली, लक्ष्य भिन्न हैं विशाल विश्व में।

नीति अलग, अवसर अलग
है समझने का तत्व अलग ।
साधारण लोगों की कथा जीवन स्थाई में
विधि और परगति के लिए स्थान नहीं।

मनो गवाक्ष खोलने पर
दिशा दिशा का दृश्य अलग है
रोशनी, अंधेरा मनुष्यों में
मनो भाव के सोपान पर
ममता बंधन से
समता–भावना से
मनुष्य साधन हो गया
जलकर मनुष्य ने साधन दिखाया।

समाज में स्नेह की धारा (16)
शीर्ण होकर, परिशुष्क होकर
सिकता–श्रेणी–दृश्य बचकर
अदृश्य होने के ख़तरे का अंदाज है
उत्साह के सुमनों से

प्रेम के फलों से
कल्पना सौंदर्यमय ऊहा में
हरेपन के लिए आवेदन।

जीव शक्ति विलुप्त हुए सो
रेणु रेजु समूह
पृथ्वी के तल पर
भ्रांति, कांति और शुण की सीमाएँ।

ऊपर हिलने का विनील मेघ
नीचे शुष्कीभूत भूमि का तल
प्यास बुझाने दूर दूर तक
किसी जल–धारा तक चलना ही पडेगा।

विस्तृत अवधि पर कहीं
सस्य राशि स्वप्न–खंड होने पर भी
भूख मिटाने के लिए किसी घर में
हाथ का इंतज़ार करना पडेगा।

आकाश छत सा सारा प्रपंच
सब के लिए निवेशन समझे तो भी
अंधेरा होते ही मानव के पीछे मानव
चार दीवारों पर खडे
किसी छत के नीचे
दरवाजा खोल कर आना ही है
सीमा नियत वासी होना ही है।

अभियान – II

(1)

समझा कि इस बीच सकुशल हैं
पर अर्धरात्रि निद्रा में भूकंप
हिलते डुलते गिरने के भवन
ज्वालामुखी स्फोट का भीषण प्रवाह
दिन में अजीब सा विस्फोटन
एक एक ने जीवन को
छिन्न भिन्न करके निर्वंश किया।

आग लगा जनारण्य
बडबाग्नि उठे सो जन–समंदर
एक तरफ़ जलने के नगर
भय की छाया से आवृत समाज।

अशांति के दीपों से गिरने के
रक्त–बिन्दु के समूह से मिलकर
दीप स्वागत गाता है।
वीर गाथाओं की प्रकाश–रेखाओं से,
भय से स्थगित करता सर्व
टियर ग्यास–सेल्स की ध्वनि।
चलती दिवा के सिर पर पीछे से मार पडता है
निश्चल रात्रि के सीने में, सामना कर छुरी उतरती है
हंटर की अंतिम छोरों से चमकने की नज़रों में
पाप न किये सो प्राणी घाटी में गिर पडे।

नदी से सरोवर तक
लाल चित्रों से पानी,
सफ़ेद रोशनी को पीछे धेकलते
वेलाओं को लाल छोरों से अलंकृत करते।

उन आँसू से बढ़कर
इस रुधिर धारा को
ठीक समझने के समाज ने
किस सौभाग्य के लिए मार्ग निकाला?

(2)

जीवन समर में थक कर
रात में थोडी विश्रांति से
उदय काल से तैयार मानव
जीवन समर में खडे होकर।

अनल हृदय से
उत्साह ग्रीष्म से
घर से ज्वालो होकर बढ़कर
नील वर्ण शिखर होकर आया लौटकर।

जल जल कर राख होने के दिन
मसि मसि चाँदनी से भरी रात्रि
न छूटने की गरीबी से
न सूखने के विचारों से
रेगिस्तान में रस खंडान्वषण

वसुधा से न छूटने का आधार बंधन।
फेंकी छोटी सी कुटिया से
विस्तृत पैवमेंट तक
ज्वाला पटाच्छटाओं के पीछे
सुंदर भविष्य का रूप
न मिलने का इन्द्र–चाप वास्तव
भागने का स्वप्न–मृग
घर्षन में अशांति जीवन
चन्द्र हीन निशा गगन।

(3)

अवसर वाद के, युद्ध भाव के
निरोध के, निराकरण तत्व के
अहंकार के, कुटिल नीति के
मध्य आशा वृक्ष–पुष्पों से
दूसरी पीढी पर विश्वास से।

राकेट गमन के गर्जन से भयभीत होकर
शंपा चकित होकर, धूमाग्नि छन्न होकर
मानव का मुख नहीं दिखाई दे रहा है
एक के अन्वेषण में दूसरा।

पीडितों की क्षुधाग्नि से सेंक लेने वाले
ताडितों के व्यथार्थियों से गाने बेच लेने वाले
तृषा मूर्ती, कीर्ति वाहक
ज्ञात ओ अज्ञात के अर्भक भ्रम से।

आधा जलकर, आधा बचकर
बारीकी धुआँ छोडने की समिधाओं के जैसे
रात को अस्तित्व देकर
दिन की आयु बढाकर।

हाथ में मेशिनगन लेकर
युद्ध और शांति की सीमाओं में
खाकि ड्रैस में सैन पोस्ट के जैसे
रक्षा की बन्दोबस्त होने की बात नहीं।

ऐ. रा समिति के आइने के अलमारी में
शांति कबूतर सौंदर्यमय शिल्प
हवा में हिलती डुलती अग्नि कणों से
दृश्या दृश्य है वर्तमान
असहिष्णुता, क्रोध, दुख से
सही शांति, सौभाग्य चाहने की
नई पीढी की कामना में
नये युग की आशा से।

सुंदर प्रभात वेला
कभी कभी अनल गुच्छ हो जाती (4)
क्रोध धारा से पुष्प–पटल ज्वाला में बदल कर
किस पर गिरेगा, नहीं मालूम।

अशांति की शब्द तरंगों पर
क्षितिज प्लावित हो रहा है;
नियंता के पद घट्टन् में
अवनि का सहन – शक्ति धूली बन जाती

नदी के पानी की लहरों को
अग्नि शिखाओं में बदलने का;
चमन के जाड की शाखाओं को
आयुधों में बदलने का,
भाषा, प्रांत, वर्ण, कलह दृश्य हैं
अनागरिक की मूढता से
नागरिक के स्वार्थ तक।

अंगामा, भय, भीभत्स, विनाश
मानव के इतिहास में अवश्य होने पर भी
मृत्यु द्वारा फेंकी गई जाल न होने दो
रात के द्वारा फेंका गया बांब न होने दो।

रेगिस्तान के भुजाओं के ऊपर से
निशान ताने क्षिपणियों से
समय मृत्यु हेला के लिए तैयार होकर (5)
इतिहास चमक गया अग्निपात्र होकर।

रेगिस्तान का शरत् हृदय
रात अपनी ठंडी आँखें खोलकर
अग्नियों को समझ कर

पानी बन जाने तक मैं ।
मनुष्य को लगे घव
लाल लाल अग्नि–कण होकर
गीतों के सिंह मुखों से
शांति को अलंकृत किया।

हजार हजार आँखों से निगरानी करता
हजार हजार बाहें उठा कर बुलाता (6)
दूर दूर से नगर
अंगुलियों पर खडे होकर देखते
किसी को भी, कैसा भी हो
समा लेता अकुंचित रीति से।

सुंदर भवनों से, मीनारों से
लिपे पुते पेयिंटिंग से भी
डालने के लिए बचे सो
कान्वास जैसा
रहने से भी बढकर
अधिक पाने वाला
यौलन जैसा
दूर दूर से नगर क्षितिज।

चलने के रास्ते अलग होने पर भी
हक के लिए कष्ट–जीवी के नारे
चक्कर खाने का बाधा मय रव
बढ़ जाने की दिशाएँ एकता में लिपट गई

सामाजिक चेतना में
विश्व परिस्पंदन से।

उडने के सोच–विचार रूपी विहंग
मनुष्य में नाना रंगों में तैयार होकर (7)
सुवर्ण शलाका से निर्मित
पिंजरे में बंधी होकर

पिंजरे, पिंजरे की अलग अलग भाषा से
गगन शब्दमय होता है।
पिंजरे के दरवाज़े खोले तो
विहंग स्वेच्छा से उडकर
लौट आये तो पिंजरे में
बिना भटके, आदत से
आनंदित हुआ भ्रमावरण जीवत भ्रमण में
ज्यूँ विश्व का चक्कर काट आया।

हाथ पसारे सो वसंत की शाखा पर
आदत न छोडने की कोयल
अब
'की' देने पर गाने का प्लास्तिक नमूना
घर में टेबिल पर पहुँच गया
अतराफ़ के आइनें में बिंबित होकर
अलग अलग रुपों में आकर्षित कर
कभी क्यों न हो
मार्केट में बेचने के लिए तैयार ।
इसे अब पिंजरे से नहीं मतलब ॥

अभियान - III

शाखाओं को हिलाती हवाएँ
सुदंर स्वप्नों को पुष्पित किया
शरीर का अनुसरण करती छायाएँ
रास्ते में प्रकाशों को निगाल लिया ।

अतराफ़ परिव्याप्त जल के मध्य
स्थित द्विीप के समान मन ।
अतराफ़ खडे
कल्पना के सलाकों के मध्य
स्थित हंस के समान स्वेच्छा विहंग ।

अब वसंत की शारदा पर नई
आटोमाटिक कोयल आई
"की" के बिना
ठीक समय पर गाना गवा सकत्
उगादि संदर्भ का सृजन करा सकते
पिजंरे से स्वेच्छा
टेबिल के ऊपर आये जैसा
फिर वसंत की शाखा पर चढ़ेगा ;
इससे बढ़ कर और संतोष क्या है ।

निश्शब्द को शब्द प्रपंच में डुबाते (8)
मन को वज़नदार अनुभव से स्पर्श करते

ऊपर से विमान यान, प्रेम से
उडकरआने के पक्षी के मारों से बचते।

निश्शब्द को दबाते, रुकाते, भगाते
शब्द चल रहा है, ढल रहा है, मटक रहा है
मैदान जैसा परिव्याप्त मन के क्षेत्र में
उठते पुष्प लताओं का अनुभव

रास्ते में हंटर का छोर लगा घोडा
वेग से निकला;
जट्का में मनुष्य
गंतव्य पहुँचने की जल्दी में
धक्कों को सहता बैठ गया।

शब्द शब्द बीच से
मार्ग बनाकर, बिना रुकावट
मैंक में गीत का प्रवचन
मनो भूमिका को सचेत करते ।
उनकी उनकी चित्त शक्ति के अनुसार उन्हें
जीवन में अन्वय की सिद्धि कराते ।

इतने में होने वाली गडबडी में पुकार
शब्द प्रपचं को टुकडों टुकडों में कतरते
तरह तरह के सैजों में अलंकृत करते
गली गली को शब्द–शिल्प चित्रशाला सा प्रदर्शित करते

घर के शरारती बच्चों पर
चिटफुट में प्रेम–भाव के जैसा
अब जो है उस अशांति में
शांति पाने का प्रयत्न।

सुन सुन कर श्रवण सहं हो गया
विध्ववंसक पदजाल
बीच में ज़रा दूर दूर पर
मंदिर के सामने बैठे भिक्षुक के आगे
फेंके सो चिल्लर पैसों का हास ।

नीचे फुटकते मेंढक को देख कर सरकता साँप
अंधे भिक्षुक के हाथ से गिरे सो लकडी की ध्वनि
ऊपर से धीरे धीरे टूट कर
नीचे गिरने की ध्वनि
प्यास भरे गले में झर जाने के पानी का बिन्दु ।

त्वरित गति से शिशु दूध पीने का शब्द
सब मिल पर मुझ में
संश्लिष्ट जीवन सिनेरियो
हरएक अपनी प्रत्येकता से
आकर्षित करते समूह में।

शामियाना में विवाह का हलचल
प्रेक्षक सुनने की क्रिकेट कामेंटरी

(9)

रोड के ख़तरे में घायल हुए सो क्षण में
बाधा से दुखित अग्नि–शिखा का मुख ।

न छूटने के प्राचीन प्रथाओं से
न छुडाने की ज़रुरतों पर दृष्टि रखकर
हाथ की घडी देखते बार बार
बाहर निकलने की ज़ल्दी में प्रतीक्षा के नयन।

लोहे के चक्रों के भार से
श्रम दलन के मुखों से
समय गडबड में डूबता है।
ज़रा देर के बाद
बच्चों के पाँव की मृदु–लय से
'स्पूनफुल' की हँसी से
समय प्रसन्न हो रहा है ।
प्रपंच का हृदय अपने में लनि होकर
स्पंदित होती वर्तमान के रुप में ।
ज्वलित होते,शब्करते, पुष्पित करते, परिमल देते
हिलता जाता है शब्द – प्रपंच ।

हर दिशा में सब ! जिसका वही ;
कोई किसी के लिए रुकता नहीं ।

मस्तिष्क में शिखरों से
हृद् में गंभीर जलराशि से

(10)

जीवन वन–वृक्षों के मध्य से
राह बनाकर निरंतर प्रयाण ।

प्रयाण रुके सो जगह
टेडे मेडे रास्तों से
विपणि –वीथि में बोलने की कलाएँ
गोद में न बुझने की अग्नि छिपा लें।

टिम टिमाते दीप स्तंभों के नीचे
चिर हासों को बेचते हुए
रात के समय शांत – हृदय को
राह दिखाने के ज्योति–रुप ।

अंधकार में राह दिखा कर
थके पलकें झुकें
दीपों की रोशनी में अंधकार
खोया मानवता का वज्र
प्रातःकाल तक कदमों की निशनियों के नीचे
उदय से कदमों से अन्वेषण।

मिट्टी में ना मिल सकते नामोंनिशान
किसी चक्र के नीचे दब कर मिट सकते
पैर जमा कर किसी के जेब में घुस सकते
किसी बाज़ार में दाम बढ़ा सकते
बेपार की रीति में किसी प्यारी बातों से
मूल्य चुका कर संग्रह करने वाले हैं ।

खोये वज्र के अन्वेषण के लिए
रंग मंच तैयार हो सकता
क़दम वहीं रुक जाती है
सायें वहीं अंकुरित होती हैं।
स्विचआन किये तो
अभिमान की शंपाएँ वहीं पर चमकती हैं।

गतकाल औ' मजहब के नयन रुपी गुफ़ाओं से
असहन, रण, हिंसा नगर नगर में
अनल होकर, सर्प होकर, आयुध होकर, मृत्यु होकर
जल जल कर, हिल कर, उड उड कर, नीचे गिर कर
पाँव के नीचे दब रहा है मानवता वज्र
कांति मिटकर, धूलि बाजार की परत परत पर लुढकती
स्वप्न देखने के मनुष्य की आँखों के सामने
दाम मिटकर, मद्दिम होकर दिखाई पडा ।
चन्द्रबिंब को जिस किसी दिशा से देखने पर भी
हिन रहा है डरते डरते
खून भरे घावों से
धूम–कथा–स्पर्श से ।

समझा कि है अनल अरुणोदय,
समझा कि है सर्प सुम – मालिका,
आयुध ? लक्ष्य का साधन पथ होकर
मृत्यु को आह्वान देने का स्वार्थ गति गण है

पुष्पों के पटलों में मारण होकर छिपकर
मृत्यु आती है सुंदर ढंग से
हृदय पर रुक कर स्वर्ण की छुरी होकर
निश्चय होकर आता है किसी धुनि में ।

आजके विपादकरोन्मत्त स्थिति में
साधारण व्यक्ति की चाह है जीवन सुगम
प्रेम और करुणा हृदय–पक्ष खोल कर
मानव के मन–मृद तेज से जुडने दो ।

राजनीति के चतुरंग खेल में
चतुरस्र चतुरस्र बदलने के लिए लिप्त पर
पीछे से मुट्ठी से छूटी अंगुलियाँ
सामने आकर पाँव हटा देते हैं ।

अनल सुम के समान विकसित संकल्प से
स्वेच्छा के लिए अणु अणु लडने के तेज से
अभी समाप्ति न जानने के आइल पेंटिंग जैसा
आर्थी आशा से है मानव संस्कृती
गत काल के भुजाओं से स्वेच्छा सहित
मज़हब के सत्यों से सत्य होकर
बढना है जनता शांति–विश्व होकर
खुली दिशा में भग्य एक होकर ।

भय से दब कर चलने का प्राण
उठ कर ज़रा चमकना समय

भूत, मजहब की गुफाओं से समाज
प्रजा सत्ता का हृदय और विजय होकर ।

निशीथ के खंडहरों से
उदय के श्वास से जीवन
मानव के इतिहास की आशा से
पुनर्नव शक्ति का संकेत है । (12)

वृक्षों से पक्षी उठने से पहले ही
अग्नि शिखा तति उठकर ऊपर
दग्ध न होना प्राणी
ज्वलित न होना आशाएँ ।

आशय, पानी में डूबी गठरी हो तो
सोच–विचार, पक्ष उगे सो ज्याला हो तो
अव वचा क्या है ?
शिथिल विश्व के बिना ।
पाँव के नीचे दबी दबी
रहने की अंधेरी धूलि से
उदय कूदने की रोशनी में
मानवता नज़राये तो भला ।

ग्रीन सिग्नल की
आशा से रुके हुए
प्रयाणिकों सहित स्टेशन ने
इतंज़ार किया रेल का । (13)

आशा से विकसित
प्रयाणिकों का मुख–बिंब
प्रवाह के लिए इंतजार करने के
क्षेत्र–खंड दृश्य हैं ।

थोडी देर सहन
थोडी देर असहन
कब कौन सा बदलेगा, नहीं मालूम
वर्ण रेखाएँ बदल गई समय समय पर
आश्चर्य में डुबाकर और ऊपर उठा कर

प्लाट फार्म के अंत में खडा वृक्ष ने
याद दिलाया
जीवन की सहचारिणी प्रकृति से
न भूल जाने के अनुबंध को ।
प्लाट फार्म से देखे तो
दूर पर फ़्याक्टरी की चिमनी से
उठने की धूम पंकित धीरे से
सूर्य–तेज की ओर हिल उठा ।

धरती के वातावरण में
बारीकी रक्षण कवच को उधेडते
मानव के प्राण औ' मृत्यु एक रुप होकर
दीर्घायु शाखाओं पर कैंची चलाते।

विदूयुत करने पर षाक से भी बढ़कर
अंधेरे हृदय को चमकाने का बल्ब
स्तंभित पवन को हिलाने का यंत्र
प्रयाण गम्य तक पहुँचोन का अभिनव वाहन आदि
मनो पटल पर प्रतिबिंबित हुए
मानव विज्ञान– शक्ति का रुप होकर ।
श्रम शक्ति को पहचानने के इस युग ने
श्रामिक शक्ति को नुकीला कर दिया ।
उनकी मुट्ठियों को आयुध बनाया
दबी हुई आशाओं में चैतन्य पुष्पित हुआ ।

विद्युत युग से शब्द संगीत हो गया
बंद किये सो लोहे का दरवाजा खुल गया
कठिन शिला समाज का शल्य शल्य चूर हो गया
साम्यवाद और, प्रजा स्वाम्य के इतिहास की गति से ।
असंख्याक जन श्रेणी का अभिनव रुप
देश देश जाति जाति के व्यक्तित्व के समीह के ऊपर
एक ही क्रांति के यान से
एक ही विश्व–चेतना से ।

भौतिक मानस दशा दशा में
कल्पना में,क्रिया में, जीवन स्थाई में (14)
परिवर्तन के प्रति आकर्षण से
शिशिर मुक्त वसंत वदन।

सृजन गति के लिए
राजनीति विज्ञान मिल कर
नई नई दिशाओं में
सामाजिक सम्बन्ध का पथ।

वस्तुतत्व को ढक दिये सो परतें
रहस्य तल पर खडे सो परदें
एक एक हट कर गिर कर
आश्चर्य से अभिनव वास्तव।

नक्षत्रों के समान चमकते
उदय के जैसे प्रकाशित होते
फूलों से, नवोह से
मानव का महा मनीषा समाज।

भौतिक बीज से उत्पन्न होकर
मानवता जल से स्नपित होकर
प्रकृति का अंग था जो जीवन
परिणाम के इतिहास में विश्व रूप।

व्यक्ति में चेतना लाने
की मानवता का अंत नहीं
समाज को आयु देने की
कविता की समाप्ति नहीं।

पंचम सर्ग
मनस्तत्व सिनेरियो मनोभूमि पर

(1)

चेतन में मन
मानव और जगत के
भाव बंध का कारण है;
निरंतर चलन से
पात्रों का सृजन करता है
निष्क्रमण करता है।
समुद्र गुण रूप से
अपने में
कई कई विषयों को छिपा कर
चलने की लहरे होकर ऊपर ऊपर की
ऊहाओं से मनोरूप ।

वेदना से सुख दुख में
वैयक्तिक स्पंदन से
अनुभव गति चलन में
सामाजिक प्रेरण से
प्रकृति के ऊपर विजय पाने का साधन होकर
प्राचीन स्मृतियों का गुप्त निलय होकर
जीवन के पालन करने का
मनोरूप है शरीर में

दिवा निशा न जानने की
काल – गति का चिह्न है।

(2)

निद्रासे निष्किरयता से
अंधीभूत स्थिति से
जागरण के अंदर
कर्म कला के अंदर
आना ही है, मनो रूप
प्रकाश हो जाना ही है।
चमकने में ही
मानव का अस्तित्व हैं
अडोस पडोस की सुंदरता है।

कैसी समाधि को फोड फाड कर
ऊपर उठने का प्रयत्न किया
अतराफ़ की समाधियों को हिलाकर
शिला रूप के वास्तविकताओं को हटा कर
उगने के जीवन देने की
चेतना है मन को।

तीव्रमय ताप से परितप्त होने
निगूढ निशीथ में मिल जाने
प्रकृति के भाग होने के मानव में
चेतना
प्रकृति पर विजय धारा का चिह्न है।

(3)

मनोभूमि पर अरण्य
बीच बीच में जलता है;
बुझाने की शक्ति नहीं साधारणतया
स्वयं वह बुझ जाना ही है।
अपाय के भय से कोई नज़दीक न आते
कोई त्याग मूर्ति के बिना;
अपने आप बच जाते निपुणता से
किस रगड से कब जलता किसी को न मालूम।

ज्वालाच्छटाओं को बूझाने के लिए
पुष्कलावर्तक मेघ की ज़रूरत नहीं;
एक दो आँसू की बूँद बस है।
एक केवल एक हृदय – प्रेम – लहर बस है।

(4)

मन मानवीय है
जीवन मानवीय है
माटी में शीर्ण होने का शरीर भी क्यों न हो
अग्नि में दग्ध होने का देह भी क्यों न हो
शिशिर को और शून्य को नहीं चाहता
बसंत को और पूर्णता को ही चाहता।

सीमाओं में अशांति रुक कर
किनारों में सहन झुक कर
वेला पार न करने के जलधि समान
तरंग चलित मनः प्रपंच है।

गरीबी में दुख में डूबे
समस्त दीन जनालि के लिए
प्रेम झरता है अनासक्त होकर
विश्व बन्धु के गुण से दिव्य होकर।

अणु अणु में भौतिक रूप के लिए
आर्द्र कांति का स्पर्श ज़रूरत है
मनोभाव की गति में हर रेखा के लिए
ह्लाद कला लहरी अभीष्ट है।

अंधेरे घूँसले के बारे में चिंता
ज्योत्सना मय सौध के बारे में कल्पना
चिंता में से और वेदना से
कल्पना से मानसिकानंद ।

(5)

नदी हो, सरोवर हो, जलधि हो
मृदु गंभीर जलधि पर
नाव के समान
स्त्री की आकृति चेतना से।

भरकर छिपाकर जीवन
बाहर से देखे तो गुप्त होकर
अंदर से सुदर्शनीय होकर
अनुभव कला से प्रयाण रूप।

प्रतीक्षा के नयनों से
गिरने की कलियाँ फूल हो गये
स्त्री शक्ति के आकर्षण से
प्रेम – कथा के अवतार कई ।

बिन्दु रूप का आनंद
रमणीय प्रवाह हो गया
बीजभूत सौंदर्य से
श्रृंगार तरु कल्प शाखाएँ कितनीं।

निश्शब्द हृदय जलधि से
अमूल्य रहस्य आविष्कृत हो गया
भीतर बंध की गई मधुर स्मृतियाँ
आँखों से गिरकर अंजलि में चमक उठीं।

सुप्त शक्ति जाग कर
उदय चित्र होकर आँखों में चमक उठीं।

सुख स्वप्न से हो
परिमल कांति से हो
मन में शून्य भर दिया अनुभव ने।

उषा में डूबकर
ऊपर उठे सो हंस के समान
उसका हृदय
हिम जाल से परिशुद्ध किरणों से

पट के समान तेज स्रवित होने का
प्रणय रूप।

एक एक प्रकाश का बिन्दु (6)
आशा बीज को जीवन दान देकर
अमृत कांति के संसेवन से
मनोक्षेत्र को फलोन्मुख किया।

नाना प्रकार के फूलों को चुन कर
किसी को बिना छोडे ही
टोकरी में या गोद में डाल कर
चले प्रयाण के क्षण ।
सूखे फूलों का स्मरण करते पवित्रता सहित
नये फूलों को चुन कर प्रेम से
चाहे अलंकार के लिए हो।
चाहे आराधना के लिए हो।

वास्तविक स्त्री तेज
भ्रम या स्वप्न जैसे लगे
मन सौंदर्य को वहन करता है
ग्लास के पिंजरे से प्रति फलित होते हुए।

चैतन्य स्रवंति से
ऊपर उठने का दिव्य रूप
मानव मनोज्ञ बिंब के लिए
सृजन शक्ति कला पुष्प है।

मनस्तत्व सिनेरियो - ॥

दिन उड जाता है
मानव के स्कंधों के ऊपर से
दिन उड जाता है (7)
हृदय कवाट पर दस्तक देकर।

नींद से उठ कर
खिडकी के पास जाते ही
प्रकाश – पक्षी आकर
हाथ पर बैठ जाता है
उतने में सिर के ऊपर से
आकाश में उड जाता है।

रोज मर्रा के जीवन में दिन तमाम
श्रमा कलित शरीर से थक कर
बेपार के मनस्तत्व में डूब कर
पक्षी के बारे में भूल गया मानव।

निद्रा आने के या निशीथ के समय आकर
मन पर बैठता है पक्षी
हाथ के ऊपर से
शून्य की ओर भाग जाता है।

इसके आगमन और निर्गमन
की पहचान का समय कहाँ ?
कब आता है, कब जाता है।
निद्रा और निशा के समय।

(8)

मानव के भीतर झाड
पक्षियों का निवास होकर
उसके साथ जीवित रहने के जैसा,
मानव में मूर्तियाँ
पर्व के उत्साह से
उसके साथ आनंदित हुए जैसा,
पवन राग से झाड
परवश होता है; प्रतीक्षा करता है
क्षत गात्रों के लिए इतनी छाया
ज़रूरत के लिए फूल और फलों से

कुसुम करों की स्पर्श के लिए
मूर्तियाँ इंतज़ार करती रहती हैं
ऐकांत में साथ देकर
ज़रूरत के लिए धैर्य – मुख से

कुसुम करों की स्पर्शा के लिए
मूर्तियाँ इंतज़ार करती रहती हैं
एकांत में साथ देकर
जरूरत के लिए धैर्य मुख से

मन में शंका को पहचानते हुए ही
जीवन का समाधान देते हैं;
वीर कवच धारण करते ही
शांति के दृश्यों को खींचता है।

मानव का शोरगुल जब न रहता
मानव जिस वेला सो जाता
शाखाओं से पक्षी
मूर्तियों की भुजाओं पर आ बैठते हैं।
निर्भय होकर फिरते हैं
एकाएक ऊपर उड उड जाते हैं।

कभी कुछ देखे जैस
जीने में ही है तृप्ति
अनुभव के गुण में ही है आनंद
तृप्ति और आनंद से ही है शांति।

झाड नहीं पक्षी नहीं
घर नहीं मूर्तियाँ नहीं;
नहीं है सोचे तो कुछ नहीं है
मानव जीवन
कुछ तो परिहास के बिना।

किस बरफ़ से
उदय श्वेत मुख भरता है ?

(9)

किस बादल से
दिवस श्याम मुख धरता है ?

घडी में फिरने के
बडे और छोटे खाँटों के बीच से
सरलता से या कठिनता से
काल किसी हाल भाग निकलता जा रहा है।

पाँव के बीच में लुढकता
ऊपर फेंके जाते हुए
खेल में फुटवाल जैसा
मिले न मिले जैसा काल चला जा रहा है।
शक्ति सहित बढ़ने की इच्छाओं की गडबड में
मनुष्य के मध्य मानव समाज में
शिल्प के जैसा हो
प्रवाह के जैसा हो
प्रकाश के आकर्षण से हो
अंधकार के विकर्षण से हो।

एक की बाधा दूसरे में लिपट कर
एक की कथा दूसरे में पल्लवित होकर
पुराने बोझ को कम करने के यत्न में
नयी बोझ उठा कर अप्रयत्न से
बीच बीच में नक्षत्रों के आह्वान से
सम विषम तलों में अनुभव प्रपंच

एक के बाद और एक
भूच को ज्ञापित करते बचि बचि में
पुल के संगीत के जैसा ।

चांद्री निशाएँ
उदय, सायं,संध्याएँ
घटनाओं के मोढों से
मनोभावों के स्वरों से

सफ़ेद,काला,पीला, लाल
विविध वर्ण–कलित मुखों से
ऊपर से गिरीं अशाओं की शाखाएँ
पुष्पित फूलों से फलों से
मन में उतरे मूलों से
प्रकृति का प्रतिबिम्ब जन गण।

बाधामय गाथाओं के मथन से, कथन से
दुधार तलवारों की चमक दमक में
समय के लिए ताक में बैठे औ,संसिदूध होकर
मंच पर दिखने के मतुष्यों से दृश्य
प्रात्रों का आगमन और निष्क्रमण सहित
शक्तियों का वैरुध्य संचलन से।

गृहावरण के प्रांगण में
पुष्पों पर धूली की परत जमी

(10)

भँवर का पता नहीं
स्मृति में झंकृति के बिना ।

जब कभी जीवन में
चाहने के सब मिलते नहीं
मिलते हैं तो सहने की शक्ति चाहिए
कुछ भी मिलने दो न मिलने दा
किसी को सहन करने की शक्ति हरने दो या न रहने दो
आशा सहित प्रतीक्षा सहज है मन में ।

बारिश का तुषार बरसकर
धूलि की परत अदृश्य हो जाती
पुष्प सहित झाड, लताएँ शुभ्र हो जाती हैं
वन तब शिशु का अतंरगं हो जाता है ।
बुझने के बदले अग्नि
पटलों के बीच से आँच के जैसा
बाहर आती है
जीव रागों का अविष्कार करती ।

चेतना में सूर्य तेज के समान सत्य (11)
मुख में चन्द्र बिंब होकर
सामने आयी किसी निशा मति को
समय पर मार्ग दिखाया ।

परीक्षा के लिए आयोजित संघर्षण में
विजय भावना में आनदं से
मेघों से
तरु शिखरों से
पक्षी जैसा प्रकाश
हृदय पर सिर झुकाया ।

अंधकार अतराफ़ ताक में रहकर
छायाएँ समीप में झुक कर
आह्वान पत्र के जैसा
नक्षत्रों का प्रकाश ।
प्रेम से स्नेह से विश्व बन्धु गुण से
समाज के बंधन से मानवों को आकर्षित करते ।
शान्ति और स्नेह को सवाँरने के लिए
भगीरथ प्रयत्न चला समय पर
कई
भस्मीभूत हो गये
शिला सदृश्य हो गये ।

अग्नि को देखे तो भय लगने पर भी
आवश्यकता पडने पर सहायता करती है
मानव को देखे तो भय न होने पर भी
आनशयकता के बिना ज्वाला वल्मीक हो गया ।

जमीन पर जलते हैं तो
हर पग को स्वाधीन करने को चाहता है
नदी के किनारे चलते हैं तो
समस्त जल को घट में भरने की चाह होती है ।
ग्रीष्म वेदवा से हवा से

तूफ़ान होकर दिल को हिलाया
शांति के लिए किनारे को पार किया
उधर का प्रपंचकुछ भी होने दो।

(12)

हर व्यक्ति जन समंदर के किनारे पर
निर्मित मनो नगर में निवास करता
तूफ़ान उठकर लहरें कूद कर
नीर भर कर जल मय हो गया ।

खतरे की शंका से, डर से
किसी घर के छत पर हो
किसी वृक्ष पर हो पहुँच सकते
बाढ़ में बह कर जा सकते,
भाग्य से प्राण बच सकते,
नीर हट कर नगर बाहर आकर
फिर निवास वहीं पर होगा ।
हर व्यक्ति जन समुंदर के किनारे पर
निर्मित मनो नगर में निवास करता ।

(13)

कल्पना में
आँखों के सामने
वस्तु अदृश्य हो जाती है ।
वास्तव में
आँखों के पीछे वस्तु सामने रह जाती है ।

कंपन से स्थूल से
स्पर्श से सूक्ष्म से
निश्शब्द शिलाओं को हवा
खचित करती है शब्द शिल्प से ।

विविध शाला मंदिर
मनुष्यों से, अतराफ़ वस्तुओं से
कभी शून्य नहीं होता
पुराना भी नहीं होता
समय गुजरने पर नये मुख से
रंग बिरंग पिंजरा होकर
झूलता है आकर्षण से ।

(14)

एक तरफ़ आर्ति में ज्वलित होकर
एक तरफ़ भाष्प–वारि स्नपित होकर
बिंब का रुप संपूर्ण हो जाता ।

शरीर पर लगे घाव
दुख में डुबाते सताते हैं।

हृदय पर लगे घाव
बाधा में झुलाते रुलाते हैं।
गगन – हृदय में विन्यास से
साहस यान से विमान
क्षितिज की भुजाओं से
ऊपर उडने के समान मुझ में
सोचने का हंसी यान
चेतना में विविध दशाओं में
मानव को और समाज के बीच
बारीकी स्क्रीन के जैसा मन ।
संकोच व्याकोच के गुण से
विविध दृश्यों को बिंबित करने की सिनोरिया ।

मनस्तत्व सिनेरियो - III

(15)

मन में सिलसिले में मगर दूर दूर पर
खडे हुए भय शिखरों पर
धैर्य–पताका ने लहराया
आत्माकाश में सिर उठा कर ।

प्रांश लभ्य फल को वामन जैसा
हर एक पाने का प्रयत्न
खुद के लिए अज्ञात, सोच–विचार का पद्म
सवित्रु–किरण–स्पर्श से दिव्य होकर
व्यक्ति, अनुभाव के कूलों के बीच
प्रवाहित होने का अनुभव जीवन है
प्राण, आत्म के शिखरों के बीच
खडा हुआ पुल शरीर है।

मानव के शरीर में मन
प्रार्थना से परिशुद्ध होकर
ध्यान से उज्ज्वल होकर
वेदना से पुनीत होकर
आत्म – कांति से अपूर्व है।
भगवान के परिमल तेज से
लिपे मनोनयन रुप के लिए
समस्त सुंदर है
दुख हरा – भेद है ।

दुख और अभाग्य भूलने को (16)
संतोष और सौभाग्य पाने को
मन ने देवताओं को पाया
स्वप्न देखने की शक्तियो का प्रतीक ।

बाधा हृदय बाधा साहित होकर
रगड और बोझ से अवश होकर
मृत्यंजय के लक्ष्य से विज्ञान
चेतना के बारे में शोध करता हर ज़गह ।

गगन में ज्योतिर्गण संचार से
जीवन चक्र में दशांतर्दशाओं को
लिप्त सम्बंध–योजित है
काल गमन का विधि रुप दर्शित है ।

दैव से अन्य प्रश्न पूछने पर
जिज्ञासा और अन्य मोढ पाकर
जीवन का चिर लक्ष्य बदल गया
आत्य शक्ति के अन्य पार्श्व ने
मन को आकर्षित किया।

काल से पाने के परिणाम पार्शों से (17)
अज्ञान परत कृषीभूत होकर
मूढता टुकडे टुकटे होकर गिरकर
अविवेक परत परत होकर हटकर

प्रयाण थोडा सा सुगम होने पर भी
विचार–विमर्श अनुभव कला में
संपूर्णता आने वाले ही है।

पीढी पीढी के लिए अधिक हुए सो
विज्ञान विजय पार्श्व
मानव शक्ति के लिए और अतीत शक्ति के लिए
बीच में रहस्य
अभी बचा हुआ है परतों में छिपकर।

मनीष उन्मुख होता है
चैतन्य शिखरों की ओर
भौतिक श्रेणियों को पार कर
अतीत बिंब बंधुर होकर।

हिलते होठों के ऊपर से
निश्शब्द मय मार्गों से
उठने के प्रार्थना के नक्षत्र
दिन में अनंत दिगंत पर
जहाँ पर हपुँचाना है वहीं पर
पहुँचाने का विश्वास।

आत्म ज्योति से (18)
आँखों के दीप से
मुख के दीप से

प्रति मनुष्य दीप मय है।
बढकर ऊँचाई को पकडने के लिए
उतर कर गहराई को छने के लिए
पार कर सीमाएँ प्रयाण करने के लिए
कण कण में ज्योतित उत्साह।

अंधकर चीर कर
शिल्प शालाओं में सिंगार किया
अंधकार को सजा कर
स्नेह दीपक में बदल दिया।

ज्वाला के मुकाबिले में ज्वाला चली
क्रोध वीरता से, स्नेह प्रेम से
जलधि में लहरों के बाद लहरों के जैसा
एक के बाद एक, समाज में यही सिलसिला।

शब्द का अनुकरण कर शब्द जैसा
सोच से सोच के जैसा
ज्वाला का अनुसरण कर ज्वाला के जैसा
आवश्यकता के भाव से निरंतर चलता है।

ज्वाला से लहर होकर
जन्म लेता प्रकाश
मनुष्य के मन में
किंचित् राग उगाता।

(19)

हर व्यक्ति में चेतना में
मनस्तत्व का ज्वाला रूप
भौतिक जीवन पटल से
अस्तित्व रहस्य में पडकर।

कभी किसी हवा की लहर से
किसी दिन किसी इच्छा से
कहीं किसी हाथ के स्पर्श से
कहीं थोडा सा बाजू में हट गया।

जलधि के ऊपर लहरों सा
यह पाने के रूप अनेक
पुराभाव तत्व से
आधुनिक नव बिंब का आना।

इसके लिए इतना स्नेह ज़रूरी है
आर्द्र होकर बत्ती जलने को
इस के लिए इतना अवसर ज़रूरी है
स्वेच्छा सहित श्वास लेने को।

मनःशिखर से तेज
दृष्टि न पा सकने के सूर्य बिंब जैसा,
मनःस्तल पर कांति
दृष्टि स्थिर होने के चन्द्र बिंब जैसा।

(20)

ऊहाओं को बजाते प्रकाश
आँखों के सामने कितने रंगों में
हर प्रकाश ने प्यार से बुलाया
लाल प्रकाश ने ख़तरे की सूचना दी।
सफ़ेद प्रकाश ने संभावित किया संतोष से
श्याम प्रकाश दुबक गया डर डर कर।

रंग मिलकर
नई रीतियों से
उछलने के
तितिलियों के समूह के जैसे
मनोभूमि पर प्रकाश
मुख में प्रश्नों को गायब कर
तृप्ति औं संतोष, पर खोल कर।

भूमि के शिखर से
मनो शिखर तक
एक ही चेतन श्रेणियों, श्रेणियों में
भिन्न भिन्न वर्ण कांति रूपों में।

(21)

स्वप्न प्रवाहित होता है नदी के जैसा
पार करने के प्रयत्न में
आकर्षण से समस्त भूल कर
विहार करने मन तैयार।
जीवन में स्वप्न अंतर्भाग है
जीवन को छोड कर नहीं रहता अलग होकर।

स्वप्न आकर्षित करता किनारे के जैसे
ज़मीन पर क़दम रखते ही
धुआँ सहित उठने की ज्वालाएँ
घाँव से गिरे हुए शरीर को
आयुधों से गाढ़ दिये सो हाथों को
पार करना ही पडता है मन।

वास्तव से उद्भव लिया स्वप्न
वास्तव छोड कर अलग न रहता
क़दम डाल कर सामने झुक कर
हाथ में लिये सो मिट्टी में
विविध वर्ण सुम पराग है।

चेतना से प्रेरित होकर
भय से मुक्त होकर
प्रेम हृदय चुंबित होकर
हेतु किरण परिष्कृत होकर।

युग से युग तक
नव मानव समाज
मानस के तेज से
स्वप्न के होश से।
एक एक नक्षत्र को
छूकर, लिपट कर
प्रकाश कायमान होकर
अंधेरे के कमरे दिखाता है।

(22)

कल के मानव–सौभाग्य के लिए
आज प्रस्तर काट–छांट कर
जीवन शाला के लिए सुंदर रूप
देने के लिए चाहा हर पीढी ने।

स्वप्न कितना भी सुंदर होने दो
गरम निद्रा के मृदु पतत्रों से
मन फिर तब कर रहने तक ही।

न रुक जाने के कल के साथ
जीवन प्रवाहित हुआ;
स्वप्न से वास्तव तक
मनो भूमि से तल तक।

समुद्र पर प्रयाण होकर
किनारे तक चलने की
नाव के जैसे
गभीर मनो तल पर
निश्शब्द–शकल–शिल्प
मुझ में आलोचना का रूप है।
सामना किये पवन को चीर कर
घुस जाने की रेल जैसा
नील गगन में उड कर
शब्द–चलन प्रपंच
मुझ में विचार का रूप।

मुझमें निश्शब्द गगन
शब्द –प्रपंच वहन कर
विवृत, संवृत निशित होकर
अनुभव शक्ति समाहित होकर

शब्द, निश्शब्द मिल कर
मुझ में सृजन की
विद्युन्नव कविता
मनो दृश्य संकाश।

षष्ट सर्ग

तत्त्वोन्मीलन

गगन से क्षितिज में
क्षितिज से भूमि पर
प्रकाश के समान मन में सोच–विचार (1)
भौतिक मनेविज्ञान भूमिकाओं में
पात्रों को चैतन्य रूप देते हुए
रूपायित किया जाति ने संस्कृती का रूप
छोड देना भी चाहे छोडता नहीं भूतकाल
मन से जुड कर ही रहता।

अंधेरा आता जाता
मनुष्य में अपना पद–चिह्न छोड कर
प्रकाश आता जाता
मन में सृजन शक्ति जोड कर।

दिशा दिशा में वस्तु में परिणाम से
अपनी शक्ति प्रकटित करती प्रकृति
विज्ञान–गति को प्रेरणा देती
जगत् तत्वृदृष्टि का मूल होकर।

पंच भूतों से पंचीकरण से
पंचेद्रियों से, कार्य कारण भार से

चैतन्य मूल होकर दृश्यादृश्य प्रपंच
आत्म–दर्शन गुण से मनुष्य में तत्वावलोकन।

प्रति वस्तु मनुष्य की ओर
देखती सी रहती है
परस्पर अनुबंधन से जीवन का भाग होकर (2)
वस्तुएँ समाज के लिए ही हैं।
यूही प्रतीक्षा करती रहती है।

रक्त में रंगोली की कवोष्ण शक्ति से
प्रति वस्तु को हृदय से थाम कर
लगता है प्रयाण में प्रपंच
अपने में एक हो जाय।

शांति के लिए ढूँढती है हवा
तूफ़ान होकर हृदय को छू सकता
विश्रांति के लिए ढूँढती है अग्नि
हृदय को छूकर भभक उठेगा।

लगता है
चाँदनी लता से शरीरांचल
परीवृत हो जाय,
लगता है
अग्नि की प्यास से मंन
विमुक्त हो जाय।

समाज पुराना है
मन पुराना है
तो भी
जब तक से नये मेहमान जैसा
परिचय होकर भी, नहीं हुए जैसा।

हर एक दिन का प्रति उदय
निद्रा की जडता से चेतन सहित
सामने आ पडता
किरण होकर; अंकुर होकर, पुष्प होकर
सुंदर–जीवन–रुचि–भावना से
अलंकृत करता है।

मानव का भौतिक रूप
चेतन का अवरोध नहीं
आध्यात्मिक साधन में
अतीत दशा पाने को।

(3)

परिमित आयु के बल से
घटित–वस्तु के गुण से
स्थूल शरीर में
सूक्ष्म सूक्ष्म सूत्र होकर
ज्ञान शक्ति से
मनो विकास रूप होकर
निम्न स्तर से

ऊँचे स्तर तक
आरोहन के साधन से जीवन में
संकल्प, आदर्श व्यक्ति व्यक्ति में।

शरीर शिल्प के जैसा अवधिभूत होकर
मन–क्षितिज के जैसा सीमा हित होकर
जहाँ के वहाँ विस्तरित होने की सीमा से
होते होते विकसित हुआ मनो प्रपंच।

शरीर प्राण से, मन
भौतिक गति से अस्तित्व से
अभौतिक दशा के लिए आवेदन
फिर उसके बाद दिव्यत्व की इच्छा।

जितना बल समार्जित करने दो
जितनी मनोहराकृति रहने दो
जितनी मेधा संपत्ति रखने दो
मनुष्य अज्ञान कला–पुष्प है।

जडता से, चेतना से
नींद से, जागरण से
अतीत की प्रेरणा,
मनो रूप की परिणति ही है।

साधारण जीवन सूत्र को
छोडने का काम नहीं कभी।

चैतन्य विकास
सृष्टि परिणाम का भाग है
मानसिकोन्नति से जीवन
भव्य समाज के लिए जीवन
भव्य समाज के लिए मार्ग है।

शरीर से मानसिकता तक (5)
भौतिक से अभौतिक तक
अतीत से दिव्यत्व तक
क्रम परिणत ही आत्म साधन है।

चेतन ने, अंतरंग ने
दिव्य शक्ति का वहन किया
अनुभूति के जल पर मन
सुंदर सुगंध यान पात्र होकर।

स्वच्छ–समता पूर्ण
नव्य–कांति की दिशा में
आनंद से प्रयाण करना ही
जीवित शिल्प में मानव लक्ष्य है।

विज्ञान किरण ने शाखाएँ उगाई
सुवर्ण पुष्पों से (6)
अमृत फलों से
गुण कर्म संकल्प से

आत्म–शक्ति प्रसार से
व्यक्ति में प्रकाश मान
दिव्य शक्ति आविष्कृत हुई।

मृत्यु शाश्वत सत्य का
प्रवेश द्वार बन पडी;
मृत्यु के सोपानों से प्रयाण
शांत, वीर चरण कीर्ति से प्रकाशित हुआ।

अणु में न दिखाई पडने का सत्य
अनुभव के लिए परमाप्त हो गया;
दृश्य से अदृश्य तक
अदृश्य से दृश्य तक
चलने की शक्ति में भाग होकर
बिंब होकर, पूर्ण होकर, व्यक्त होकर
दीप दीप की संतति से
व्यक्ति से समाज में
आने का परिणत रूप
पूर्ण से संपूर्ण तक।

मनो निकेतन में एक द्वार के
बाद और एक द्वार
शरीर के अणु अणु में (7)
पृथ्वी पथ के बारे में सोच
रक्त में कण कण से

बुलाने के रक्त के बारे में सोच।
काल के हाथ में
हर दिन हार जाते
उदय उठते ही
खैर उस दिन तो जीतने की इच्छा।

आरोहण से बढ़कर वेग
अवरोहण में होता है
पुरोगमन में आह्लाद भरा क्षण
संकल्प में विकसित अनुभव पुष्प।

व्यक्ति को छोडो मगर
छाया मात्र दिनभर
धीरे धीरे हिलती गई
एक तरफ़ से दूसरी तरफ़।

ऊपर का सूर्य किरणों से
शिला पर, नीर पर है समान;
मन में आत्म तेज है
जीव गति को चैतन्य देते।

कभी आधी रात
बाढ़ में बह गये
निकेतन को अभी तक
मन ढूँढ रहा है

(8)

प्राण बचा कर
अन्य स्थान के लिए बदली होकर।
अतराफ़ जमा होकर सब
कुछ कहानियाँ बोलते हैं;
गाँव के बारे में
घर के बारे में
वहाँ के अनुभव के बारे में
कहीं न मिलने के अनुबंधन से।

नगर के मन में जनता का ढंग
उदय, शुभ्र हुई दीवारों से तैयार
पुरानी लिखावट भूल कर
नई लिखावट का इंतज़ार करते।

घरके सामने पुष्पों से डालियाँ
आँखों के सामने अनुभव सत्य को
याद दिलाते;
घर के मार्ग में मोढ पर पत्थर
सोच में रुकावट डालते
मनुष्य को रोकते;

उदय मुख, कल जो देखा था
आज जिसे देख रहे हैं; एक नहीं होते;
प्रकाश का लिपटापन अलग, सौंदर्य अलग;
रंगों की मिलावट अलग, उपयोग अलग।

मनो बिंब, कल जो देखा था
आज जिसे देख हरे हैं; एक नहीं होते;
अनुभव अलग, सोच अलग
कर्म कला अलग; फल भाव अलग।

(9)

मनो समंदर में लेने
की हर डुबकी से ध्वनि
सृजन शक्ति से हवणित हुआ
कविता होकर संगीत होकर मुझ में

अग्नि मूल से जीवन
ज्वाला होकर उठकर निर्भयता से
शांत गगन में विलीन हुआ
दिशाओं में प्रभाव की कलाएँ बचाकर;
सपूर्णता के लिए कष्ट उठाने के व्यक्ति में
अग्नि के साथ विवेक की ज़रूरत हे।

यश के समुद्र में मनस्वी ने
प्रयाण किया नाव सा
स्वेच्छा प्रदत्त भगवान से बढ़कर
कितनी स्वेच्छा–रुचि को अनुभव करते।

सुख यदि शरीर की स्वेच्छा हुई तो
सौभाग्य मात्र जीवन की आशा है।

(10)

मन का गम्य शांत–शिखर है
आत्मा का लक्ष्य आनंद–गगन है।
अंतरंग में हंस
संदेश लेकर
भौतिक से अतीत तक
सीधा तेज होकर
चलती चमकीली लता के जैसा
चमकते प्रकाश मय मार्ग के जैसा।

शब्द–गंगा से
आत्म–सरोवर तक
कांति–यान से
शांति–मंत्र से।

गगन–यान वायुयान की
किसी दिशा में हैं गम्य और आनंद
ग्रीष्म में तृषार्थ प्राणी के लिए
सरो हृदय पर शांति।

किसी भय से कूदा हुआ शब्द नहीं
किसी आश्चर्य से सरित स्वर नहीं
ऋक्
हंसाकृति
आत्म दर्शनाविष्कार
मानव का मनो तपःफल

दुख, वेदना में गर्भित
आनंद का परम साधन है।
पदार्थ प्रकृति से
प्राण जीवन से
मन संकल्प से
मन संकल्प को पार कर
कर्म कला से साधन से
अति मानस–चेतन की तरफ़
बिन्दु से लेकर
आत्म संपूर्णता के भीतर
विविध शक्ति स्थानों से
विविध राग धाराओं से
श्री पुरुष के सहज
समाकर्षण से
आत्म–सौंदर्य से
दिव्यानुभव तक।

शरीर के बिना न रह सकने का
मन
दिव्य–शिखर के चेतन से
आत्म–गगन की ओर।

चैतन्य परिणाम से
प्रयाण करने की मानव संतति

(11)

अतीत चेतन को पार कर
पाया दिव्य–रूप।

दिव्य होकर व्यक्ति में परिवर्तन
सत्य होकर समाज में खुला किया
आनंद का हिरण्य कवाट
सौभाग्य का सकर्म विकास।

अति मानस–चेतन भूनिका से
प्रेम होकर, श्रेय होकर, शक्ति भर होकर
सम समाज का समाविष्कार
विश्व हृदय का संपादन।

टेलिस्कोप दृष्यों का आल्वं
टेक्निकल से स्पंदनमान
वचन कविता महाकाव्य
निखिल मानव का क्रांति–तेज है।

प्रो. मादिराजु रंगा राव की कृतियाँ

1) युग संकेतं
2) मेल्कोन्न आकाशं
3) उष आगमनं
4) मुक्तकालु
5) मानवीयं
6) वयोलिन पै रागं तो
7) मुंक्त धात्रि
8) पडगेत्तिन उदयं
9) वेलुगु लो ई नेल पै
10) आवाहन
11) विप्लवच्छायल्लो वियन्नां
12) अमृत लिप्तलु–रेखा चित्रालु
13) मिनी कवितलु
14) आनंद धुनि
15) मेल्कोन्न ई समयं
16) शब्दमै प्राणमै
17) वियन्नां–शांति कवितलु
18) कालाग्नि निलिपि क्षणं
19) नालो प्रवहिस्तोंदि नदि
20) ई तरं स्वरचित्रं
21) नाकु ज्ञापकं उंदि
22) अग्निमयं जीवितं
23) वर्तमानं स्क्रीन पै
24) अशांति आर्केस्ट्रा
25) अग्नि नुंडि आनंदानिकि
26) ई शताब्दि अंचुल्लो
27) नवल–स्वरूप समालोचनं
28) दाशरथि कविता समालोचनम
29) आधुनिक कवित्वम्–समालोचनम्
30) परिशोधना स्वरूपं
31) जैल कार्नर नुंडि ।

प्रो. माधव राव रेगुलपाटी की कृतियाँ

1) स्वर्ग पुरी पर हमला
2) घास के पत्ते
3) प्रवेश
4) अरूण किरण
5) छन्द विश्लेषण
6) आग और आदमी
7) समंदर
8) इन्दु एक बिन्दु दो (अनुशीलन)
9) सवेरा
10) वेमना सूक्ति सुधा
11) साक्षी
12) शत्शत् नमन्
13) जीवन पथ
14) शांति–समता
15) क्या कहती है मानवता
16) प्रिय दर्शिनो
17) हिम–शिखा
18) अग्नि से आनंद कत
19) गद्य–चन्द्रिका (सकंलन)
20) काव्य–संग्रह (व्याख्या)
21) हिन्दीसाहित्याकाइतिहास ।सुलेखमाला (भाग,1,2,3,4,5)
22) हिन्दी भारती (भाग 1,2,3,4,5) और बीस पुस्तकें । कई पुरस्कारों के विजेता – राष्ट्रपति पुरस्कार, मंगल दुबे स्वर्ण पदक विजेता ।